

३२ श्री श्याम स्तुति



श्री श्याम भक्त

कलकत्ता-७

## ॥ दो शब्द ॥

श्री श्याम प्रभु की असीम अनुकम्पा से श्री श्याम भजन संग्रह का यह अति सूक्ष्म प्रयास किया गया है। प्रस्तुत पुष्प प्रकाशित करने का मुख्यतम उद्देश्य यही है कि इसके द्वारा श्याम भक्त लाभान्वित हों। वयों कि इस घोर कलिकाल में जब कि मानव चित्त में प्रबल अशांती ने घर कर लिया है। केवल भगवद् भजन ही मनुष्य को सुख शांती दे सकता है। कहां भी है “कलौकेशव कीर्तनम्” अर्थात् कलियुग में भगवत् संकीर्तन ही सर्वोत्तम है। संकीर्तन के लिये भगवत् वचनामृत “नाहं वसामी वैकुण्ठे योगिनां हृदये न च। मद्भक्ताः यत्र जापन्ति तत्र तिष्ठामि नारदः”। भजन संग्रह में भावपूर्ण तथा भक्तिमय भजनों का संग्रह करने का पूर्ण प्रयास किया गया है। इससे श्याम भक्तों का किंचित् मात्र भी लाभ होगा तो मैं अपने प्रयास को सफल समझूँगा। यह स्नेह सिक्त पुण्य श्री श्याम प्रभु के चरण कमलों में अर्पित करते हुए अत्यन्त प्रसन्नता अनुभव कर रहा हूँ। वैसे तो भगवान् के भजन भगवान् को अर्पण करने में मेरा कोई महत्त्व नहीं है अर्थात् जिसकी चीज हो वह उसी को देने में देने वाले की क्या बड़ाई है। फिर भी अर्पण करने वाले की श्रद्धा भक्ति का महत्त्व तो अपनी जगह रहेगा ही जैसे—त्वहीयं वस्तु गोविन्दा तुम्यमेव समर्पये।

दासानुदास

श्यामभक्त



॥ श्री गणेशजी महाराज ॥

॥ श्री श्याम देवाय नमः ॥

# ★ श्री श्याम स्तुति ★

( प्रथम पुष्प )



भजन संग्रह कर्ता :

श्री श्याम भक्त

कलकत्ता

प्रकाशक :

श्रीमती गंगा देवी चौधरी

७२, बड़तल्ला स्ट्रीट,

कलकत्ता-७

फाल्गुन सुदी ११

सम्बत २०३६

}

फरवरी १९८०

}

मूल्य

सप्रेम पाठ

## ॥ स्तुति ॥

जय-जय जय खाटू के वासी, जय-जय बाबा श्याम ।  
 शरणागत हम आये आपकी, दर्शन हमको देवो श्याम ॥  
 सुन्दर कुण्ड बना खाटू में, शोभा अति अपारी ओ श्याम ।  
 मंजुजन करते श्याम कुण्ड में, भव सागर से तयारे ओ श्याम ॥  
 शीश मुकुट आभूषण पहने, गल पुष्पों की माला ओ श्याम ।  
 मस्तक पर मलयागिरी चन्दन, मोर छड़ी लिये हाथों में श्याम ॥  
 रत्न जड़ित सिंहासन राजत, केशरिया बागौ अंग सोहे श्याम ।  
 खीर चूरमों भोग लगत हैं, मोदक भर भर थाली ओ श्याम ॥  
 ऊँचे भवन अति छत्र विराजत महिमा अमित अपारी ओ श्याम ।  
 खड़े भक्तजन चंवर दूरावे, सेवा तुम्हारी करते ओ श्याम ॥  
 नाथ अप्सरा नृत्य करत है, नित्य करे तेरा गुणगान ।  
 संत-भक्त सेवक नर नारी, लगा रहे चरणों में ध्यान ॥  
 धूप कपूर जलाय श्याम की, निश दिन आरती करते श्याम ।  
 झंझ कटोरा और घड़ियावल, शंख तुराही बाजे ओ श्याम ॥  
 नगारा तुम्हारा बाज रहा है, तीन लोक में जय-जयकार ।  
 नारद शारद शेष महेश भी, पायो नहीं तुम्ह रों पार ॥  
 आप तो हो प्रभू अन्तरयामी, मैं मूर्ख खल कामी ओ श्याम ।  
 वृद्धि हमारी निर्मल कर दो, अपने चरणों का सेवक जान ॥  
 चरणों में हम आय पड़े हैं, अपने हाथ उठावो श्याम ।  
 निश्चय मन से जो कोई ध्यावे, उसका होवे वेड़ा पार ॥  
 दोहा :—श्याम बाबा की आरती निश दिन करते गान ।  
 रक्षा करने के लिये, श्याम श्री भगवान ॥



## भजन सूची

| संख्या | भजन                       | पृष्ठ संख्या |
|--------|---------------------------|--------------|
| १      | रणत भंवर से आवो           | १            |
| २      | छांडि चरण कित जाऊ तिहारे  | २            |
| ३      | शिव डमरुवाले को           | २            |
| ४      | वजरंग - बजरंग             | ३            |
| ५      | जगदम्बे भवानी मैया        | ४            |
| ६      | दर्शन - दर्शन             | ४            |
| ७      | नटवर नागरिया              | ५            |
| ८      | बार-२ मैं तुम्हे पुकारू   | ६            |
| ९      | भोला - भाला               | ७            |
| १०     | रखवाला प्रतिपाला          | ८            |
| ११     | भूल गये श्यामा            | ९            |
| १२     | मेरी विनती पर करल्यो गौर  | १०           |
| १३     | सेवक जल्दी आ रे           | ११           |
| १४     | खाटु को श्याम रंगीलो रे   | १२           |
| १५     | वह आ गया खाटू             | १२           |
| १६     | श्याम बाबा हरो न मेरी पीर | १३           |
| १७     | कर जोड़ खड़ी              | १४           |
| १८     | ओ खाटू के बाबा श्याम      | १५           |
| १९     | ओ मुण अंजनी के ढाला       | १६           |
| २०     | कर लाख जतन तू             | १७           |
| २१     | पाय लागू जी महाराज        | १८           |
| २२     | तेरे दर्श का श्याम        | १९           |
| २३     | दर्शन दे दे ओ सांवरिया    | २०           |
| २४     | जो चाहे सो मांग भगत       | २१           |
| २५     | मन्दिर जाती मीरां न       | २२           |

| संख्या | भजन                            | पृष्ठ संख्या |
|--------|--------------------------------|--------------|
| २६     | दिल पर तेरी कन्हैया            | २२           |
| २७     | श्री श्याम घनश्याम नाम की      | २३           |
| २८     | श्याम बाबा के दर्शन            | २४           |
| २९     | कानूड़ा लाल घड़लो              | २५           |
| ३०     | आयो नहीं अब तक रे              | २५           |
| ३१     | राम नाम रस पीजे                | २६           |
| ३२     | अंजनी कुमार थारी               | २७           |
| ३३     | म्हारा सेठ सांवरिया            | २८           |
| ३४     | देख तेरे भक्तों की हालत        | २८           |
| ३५     | म्हारो घड़ी रे घड़ी रो         | २९           |
| ३६     | मन्दिर में मीरा निरत करे छः रे | ३०           |
| ३७     | जो भजे हरिनाम को               | ३१           |
| ३८     | मेरी पड़ी रे भंवर बिच नैया     | ३१           |
| ३९     | दर पे तेरे हम आये है           | ३२           |
| ४०     | श्याम पिया मेरी रंगदे चुनरिया  | ३३           |
| ४१     | मां महर करो इन बच्चों पर       | ३४           |
| ४२     | बृज के नन्द लाला               | ३४           |
| ४३     | हे रामेश्वर हे शिवशंकर         | ३५           |
| ४४     | म्हारो वेडो पार लगा दीज्यो     | ३६           |
| ४५     | मेरी गलियन में आना सांवरिया    | ३६           |
| ४६     | कोई कहियो रे प्रभू आवन की      | ३७           |
| ४७     | म्हारा खाटू वाला नाथ           | ३७           |
| ४८     | पहुंच कर महल में               | ३८           |
| ४९     | ओ कहाँ हुपे हो श्री श्याम      | ३९           |
| ५०     | खाटू में बाबो बिराज रहयो       | ४०           |



| संख्या | भजन                         | पृष्ठ संख्या |
|--------|-----------------------------|--------------|
| ५१     | चरणों का पुजारी हूँ         | ४०           |
| ५२     | कूण सजायो श्रृंगार          | ४१           |
| ५३     | डस गयो कालो रे              | ४२           |
| ५४     | ना स्वर है ना सरगम है       | ४३           |
| ५५     | लीले की करके सवारी          | ४४           |
| ५६     | मेवाडी राणा भजनां से        | ४५           |
| ५७     | अंजनी को लाल निरालो         | ४६           |
| ५८     | तेरे द्वारे आयो री          | ४६           |
| ५९     | बजरंग थे हो मतवारा जी       | ४७           |
| ६०     | म्हारा सांवरिया सरदार       | ४८           |
| ६१     | सरवरिया के तीर खड़ी         | ४८           |
| ६२     | तेरे दीदार को मोहन          | ५०           |
| ६३     | जुड़ गई जद स्यू प्रीतड़ी    | ५०           |
| ६४     | ओ हो बाबा खाटु का घनश्याम   | ५२           |
| ६५     | श्री श्याम शरणो थारो जी     | ५३           |
| ६६     | प्यारो पवन दुलारो मेरी मैया | ५३           |
| ६७     | करता हूँ मैं नित तेरा       | ५४           |
| ६८     | कब से पुकारते है            | ५५           |
| ६९     | सती शम्भवी गौरजा मां        | ५६           |
| ७०     | अब तक जो त्यारे हैं         | ५७           |
| ७१     | लीले पे सवार हो के          | ५७           |
| ७२     | जलती रहे खाटु वाले          | ५८           |
| ७३     | दयालु भगवान अरज हमारी       | ५९           |
| ७४     | मैं विनती बारम्बार करूँ     | ६०           |
| ७५     | ओ लाल लंगोटे वाले           | ६०           |

संख्या                      भजन                      पृष्ठ संख्या

|    |                           |    |
|----|---------------------------|----|
| ७६ | कलयुग में नाम कमायो       | ६१ |
| ७७ | खाटुवाले मुझे बुलाले      | ६२ |
| ७८ | म्हारी अबकी अबकी          | ६३ |
| ७९ | दया कर दान भक्तिका        | ६४ |
| ८० | मझदार पड़ी जब नाव         | ६४ |
| ८१ | मेरी बात सुनो बजरंगबाहा   | ६५ |
| ८२ | एक आश तुम्हारा है         | ६६ |
| ८३ | मैं माखन नहीं खायो        | ६७ |
| ८४ | तू मान मेरी बन्दे         | ६७ |
| ८५ | दिल की हकीकत              | ६८ |
| ८६ | आज बृन्दावन रास रच्यो     | ६९ |
| ८७ | कन्हैया हीन्डो घल्यो      | ६९ |
| ८८ | घनश्याम बढावे झुला        | ७० |
| ८९ | ओ जी ओ बिहारी म्हारा      | ७१ |
| ९० | नौ दस मास गर्भ में झूल्यो | ७१ |
| ९१ | कन्हैया नानी बाई          | ७२ |



## भजन १

॥ श्री गणेश वन्दना ॥

रणत भंवर से आवो हे रिध-सिध रा भरतार ।  
 संकटहारी हो रही थारी जग में जय जयकार ॥ टेर ॥

माँ जगदम्बा अम्बा लाड लढायो,  
 पलने झुलायो थाने गोद खिलायो ।  
 शिव शंकर भोले को थे पायो प्यार दुलार ॥ संकटहारी ॥

दूँद दूदालो बाबो सूँड सुन्डालों,  
 मीढ़ पढ़याँ बाबो वणै र रखवालो ।  
 ठुमक ठुमक नाचै, होवे पायल की मंकार ॥ संकटहारी ॥

मोदक प्रिय मुद मंगल दाता,  
 सुर नर किन्नर भाग्य विधाता ।  
 गणनायक वर दायक हे देवांरा सरदार ॥ संकटहारी ॥

प्रथम मनावौ ध्यावौ गणपतराजा,  
 विघ्न हरहु सारहु सब काजा ।  
 कला भवन है थारो, थारो ही रामवतार ॥ संकटहारी ॥

## भजन २

॥ गुरु वन्दना ॥

छाँड़ी चरण कित जाऊ तिहारे ।  
 आदि देव गुरु देव हमारे ॥ टेर ॥  
 गुरु सम देव नहीं कोई दूजा. बिन गुरु भूठी आरती पूजा  
 महिमा गारे सांझ सकारे ॥ छाँड़ी चरण ॥  
 गुरु बिन ज्ञान, ज्ञान बिन भक्ती, ब्रह्म स्वरूप गुरु की शक्ति ।  
 सत गुरु को निज हाल सुनारे ॥ छाँड़ी चरण ॥  
 तन मन धन गुरु को कर अर्पण, अगम निगम गुरु संध्या तर्पण  
 शिव शिव ऊँ श्रुत्ती वेद पुकारे ॥ छाँड़ी चरण ॥



## भजन ३

॥ शिव वन्दना ॥

शिव डमरु वाले को दिल से न भुलाना तूँ ।  
 शम्भु त्रिपुरारी की, नित आरती गाना तूँ ॥ टेर ॥  
 शिव शिव कहके प्राणी जीने का मजा लेले ।  
 मालुम नहीं कब तूँ दुनिया से रजा लेले ॥  
 भोले भण्डारी को निज हाल सुनाना तूँ । शम्भु त्रिपुरारी ॥  
 किस्मत के भरोसे पे कर्मों को किये जा तूँ ।  
 दो दिन की रवानी है हँस हँस के जिये जा तूँ ॥  
 माया के दिवानो का कुछ खौफ न खाना तूँ ॥ शम्भु त्रिपुरारी ॥  
 पी करके जहर शिव ने अमृत को विसारा था ।  
 कर जोड़ के देवो ने शंकर को पुकारा था ।  
 शिव चरणो के पानी को आँखों से लगाना तूँ ॥ शम्भु त्रिपुरारी ॥



## भजन ४

॥ हनुमान वन्दना ॥

वजरंग, वजरंग, वजरंग तेरे दरवार में अरदास हमारी ।  
ऐसा देवो वरदान, पूरो आस हमारी ॥ ढेर ॥

तुमने सिया को राम का सन्देश सुनाया-२,  
दुःख दर्द में डूबी सीया को धीर बंधाया-२,  
लंका जलाकर रावण की थे शान बिगाड़ी ॥ ऐसा देवो ॥

शक्ति लगी श्रीलक्ष्मण को थी मुछ्छी जब आई-२,  
श्रीराम ने दुःख में कहा अब कौन सहाई-२,  
लाये संजीवन हो रही जयकार तुम्हारी ॥ ऐसा देवो ॥

अहिरावण को पाताल में जा करके संहारा-२,  
श्रीराम लक्ष्मण लाकर रामादल को उबारा-२,  
युग युग तक गाथा गायेगा संसार तुम्हारी ॥ ऐसा देवो ॥

है विप्र रामोत्तार की एक प्रार्थना तुमसे-२,  
कर देना माफ हो जाये गर गलतीयां हमसे-२,  
आया कला भवन बजरंगी शरणागत तेरी ॥ ऐसा देवो ॥



## भजन ५

॥ दुर्गा वन्दना ॥

जगदम्बे भवानी मैया, तेरा त्रिभुवन में छाया राज है ।  
 सोहे भेष कसूमलनी को, तेरे रत्नों का सिर पर ताज है ॥ टेरे ॥

जब जब भीड़ पड़ी भक्तन पर, तब तब आय सहाय करे ।  
 अधम उद्धारण तारण मैया, युग युग रूप अनके धरे ।  
 सिद्ध करती तू भक्तों के काज है, नाम तेरा गरीब नवाज है ॥ सोहे ॥

जल पर थल और थल पर श्रृष्टि अद्भूत थारी माया है ।  
 सुर नर मुनिजन ध्यान धरे नित, पार कोई नहीं पाया है ।  
 थारे हाथों में सेवक की लाज है, लियो शरणो तिहारो मैया  
 आज है ॥ सोहे ॥



## भजन ६

दर्शन दर्शन दर्शन देवो श्री श्याम तुम विन कौन हमारा ।  
 दुःख दूर करो आपका है एक सहारा ॥ टेरे ॥

तुमने महा भारत में अपना कौशल दिखलाया हो कौशल दिखलाया  
 श्री कृष्ण को दे शीश दान में ऐसा वर पाया हो ऐसा वर पाया ।  
 कलि काल में पूजा तेरी सौभाग्य हमारा ॥ दुःख दूर करो ॥

मेरे ही श्याम नाम तुम देवों के देव हो, हो देवों के देव हो ।  
 जो शरण तेरी में आये उसका पूरण काम हो, हो पूरण काम हो ।  
 धन धान्य पुत्र और पौत्र दो वरदान हमारा ॥ दुःख दूर करो ॥



इसमें नहीं कुछ झूठ है श्रीकृष्ण समझावें, हो श्रीकृष्ण समझावें ।  
 जगदीश करता ध्यान बाबा श्याम कब आवे, हो श्याम कब आवे ।  
 जब चूरमा कर प्रेम से तेरी ज्योत जागाये ॥ दुःख दूर करो ॥  
 एक विनती है मातृदत्त की श्याम आपसे हो श्याम आपसे ।  
 जानू नहीं कलु भाव भक्ती अपने विचार से हो अपने विचार से ।  
 हे नाथ कैसे पापों से छुटकारा हमारा ॥ दुःख दूर करो ॥  
 हे श्याम बाबा आये हैं हम शरण तुम्हारी हो शरण तुम्हारी ।  
 मेढो हमारे संकट हे श्री श्याम मुरारी हो श्याम मुरारी ।  
 ऐसा देवो वर दान हो संसार हमारा ॥ दुःख दूर करो ॥



### भजन ७

नटवर नागरीया खाटु का वासी मनडों मोह लियो ॥ टेर ॥  
 भीम बली के पुत्र लाडले, नाग सुता महतारी ।  
 वरवरीक थारो नाम धरो है पान्ढव कुल अवतारी ॥ नटवर ॥  
 महाभारत में आप पधारया तीन बाण करधारी ।  
 दियो शीश को दान श्याम थे तपो वन्तव्रतधारी ॥ नटवर ।  
 कृष्ण चन्द वर दान दियो तब देव रूप होय साजे ।  
 दशो दिशा में जय जय होवे ढोल नगारा वाजे ॥ नटवर ॥  
 खाटु धाम में वण्यो देवरों जगमग ज्योत सवाई ।  
 ऊँचे शिखर थारी ध्वजा फरुके कोटिन काम लजाई ॥ नटवर ॥  
 कला भवन थारी महीमा गावे, पतराखो गिरधारी ।  
 विप्र राम अवतार गा रयो अमर किर्ती थारी ॥ नटवर ॥



## भजन ८

वार वार मैं तुम्हें पुकारूं सुनलो लखदातार ।  
नैया हमारी श्याम आं के लगाओ पार ॥ टेर ॥

सुना है मैंने नाम, बड़े तुम दानी हो ।  
ऐसा सुन्दर रूप, बड़े तुम शानी हो ।  
तन के सरीया वागो सोहे, कैसा है सिणगार । नैया हमारी ॥

अहिलवती के लाल, माया तेरी न्यारी है ।  
पूरो मन की आस, भरोसा भारी है ।  
अधविच नैया डूब रही है, पार करो करतार ॥ नैया हमारी ॥

आल् सिंहजी भक्त बड़े तपधारी है ।  
चरण नवावे शशि के दुनिया सारी हैं ।  
केसर तिलक लगावे थारे, करे अजब श्रृंगार ॥ नैया हमारी ॥

बंशीधर कर जोड़ चरण सीर नावे है ।  
तेरी कृपा श्री श्याम यो हरदम चावे है ।  
चरण कमल की लियों आसरो तेरा ही आधार ॥ नैया हमारी ॥





## भजन ६

भोला भाला भोला भाला, शिव भक्तो का रखवारा ।  
सारे जगका पालन करता, वो है डमरुवाला रे वाला ॥ ढेर ॥

अंग रमाये भस्म विभुती, तन ओठे मृग छाला ।  
हाथों में त्रिशूल ओ डमरु गल सर्पन की माला रे माला ॥

जटा जूट मस्तक पर सोहे, चन्द्र करे उजियारा ।  
बीच जटा में जगत तारीणी, वहे गंग की धारा रे धारा ॥

पार्वती बाये अंग विराजे, गणपति सुत है प्यारा ।  
नान्देश्वर की करे सवारी, पिये भंग का प्याला रे प्याला ॥

सदा ध्यान में मस्त है रहते, जपे राम की माला ॥  
भक्तो के हित पलक उघाड़े, ऐसे दीन दयाला ॥ भोला ॥

हे शिव शंकर हे त्रिपुरारी, हे जग के प्रतिपाला ।  
कला भवन में हरि पुकारे, भक्ती का करो उजाला ॥



## भजन १०

रखवाला प्रतिपाला मेरा लाल लंगोटेवाला ।  
 कदम कदम पर रक्षा करता घर घर करे उजाला ॥ ८ ॥  
 निश दिन इसका ध्यान लगाऊ, जपू इसी की माला ।  
 धूप दीप नई ज्योत जलाऊ, पड़े नयम से पाठा रे पाठा ॥ ९ ॥  
 मन मन्दिर में वास करो तुम, हे अंजनी सुत लाला ।  
 पापो को मेरे नाश करो तुम वन कर दीन दयाला ॥ १० ॥  
 लाल सुरत मेरे मन को मोहे, शीश मुकट बहु प्यारा ।  
 कानन कुण्डल तिलक विशाला, गल मोतीयन की माला ॥ ११ ॥  
 राम सिया थारे उर में सोहे अजर अमर थारी माया ।  
 घर घर होवे पूजा थारी, सिया सुधी लाने वाला ॥ १२ ॥  
 लक्ष्मण मूर्छित पड़े धरणी पर वैद्य बुला कर लाया ।  
 आज्ञा पा संजीवन लाने पवन वेग से चाल्या ॥ १३ ॥  
 लक्ष्मण जी के प्राण बचाये, पहाड़ उठा कर लाये ।  
 राम प्रभू को धीरज दीन्हा, भाई से भाई को मीलाया रे मीलाया ॥ १४ ॥  
 नेम नियम से ज्यो कोई ध्यावे मन की मुरादे पाये ।  
 विछड़े साथी फिर से मिलाकर, घर घर प्रेम बढ़ाया ॥ १५ ॥





## भजन ११

## ॥ पागल ॥

भूल गये श्यामा मुझे पागल समझकर भूल गये ॥ ढेर ॥

मेरे दिल में उठी उमंगें, अपलूँ नाम तुम्हारा ।

तुम श्यामा अब दर्शन दो दो, होगा भला हमारा-२  
हम बालक है नादान

तुम क्यों कर हमको भूल गये ॥१॥

तुम आवो या ना आवो, मैं लूंगा नाम तुम्हारा ।

जहा कहीं भी तुम जाओगे पीछा करूँ तुम्हारा-२  
मैं छोड़ नहीं सकता तुम वेशक मुझको छोड़ गये ॥२॥

दुनिया में तुम भक्ति की माया जल्दी फेरो भगवन ।

नहीं तो इस दुनिया में श्यामा धर्म होयेगा भंग-२  
क्यों तोड़ रहे श्यामा मेरा भक्ति भरा दिल तोड़ रहे ॥३॥

मेरे मन में आस लगी तो आया पास तुम्हारे ।

मातृदत्त है तुम बिन व्याकुल, सुनले नन्द दुलारे-२  
मैं भूल नहीं सकता, फिर तुम क्यों मुझको भूल गये ॥४॥

## भजन् १२

मेरी बिनती पर करल्यो गौर टप-टप नैणा मरै ॥ ढेर ॥

नित प्रति थारा ही गुण गाऊँ ।

नाच नाच कर श्याम रिक्काऊँ ।

राधा के चित चोर ॥१॥

देखो दीन दशा प्रभु मेरी ।

तूफानों ने नैया घेरी ।

नटवर नन्द किशोर ॥२॥

चरणा रो आधार तिहारो ।

जीवन मेरो श्याम संवारो ।

ठाढो हूँ कर जोर ॥३॥

पाप पोटली सिर पर भारी ।

कृपा करो श्री कृष्ण मुरारी ।

मोकूँ और न ठोर ॥४॥

इष्ट देव गोवर्धन धारी ।

दीन हीन मैं शरण तिहारी ।

“काशी” प्रेम बिभोर ॥५॥





## भजन १३

॥ धम्माल ॥

सेवक जल्दी आरे श्याम बावो तने बुढावे रे ॥ ढेर ॥

सहस्र हाथ से लुटा रहयो, भक्त कलेज लगा रहयो ।

जो चाये सो पावे सेवक जल्दी आ ॥१॥

अहिलवती लालो प्यारो, दान शीश देने वारो ।

श्याम रूप पुजवावे सेवक जल्दी आ ॥२॥

रोग दोष कट जावेगो, श्याम कुण्ड में न्हावेगो ।

तीन ताप तन जावे सेवक जल्दी आ ॥३॥

चार पदारथ देता है, भक्त की नैया खेता है ।

भव से पार लगावे सेवक जल्दी आ ॥४॥

कलयुग में ऐसो दानी, देव नहीं तेरी शानी ।

चूरमा में भुल जावे सेवक जल्दी आ ॥५॥

अणि मादी आठों नारी, देव हाजरी है सारी ।

दिल का दाग मिटावे सेवक जल्दी आ ॥६॥

लीले की असवारी है, कलकी को अवतारी है ।

सिद्ध पुरुष दरसावे सेवक जल्दी आ ॥७॥

दामोदर तेरे दर आयो, करो प्रभु मेरो मन चायो ।

माल विप्र यश गावे सेवक जल्दी आ ॥८॥

( १२ )

### भजन १८

खाटु को श्याम रंगीलो रे ॥ टेर ॥

ऐसो तो रंगीलो छैलो और न देख्यो,  
देख्यो एक हठीलो रे ॥१॥

खाटु वालो श्याम बड़ो ही रंग रसियो,  
रसियो मेरे मन बसियो रे ॥२॥

बंशी बजावे छैलो लुल लुल गावे  
गावे तान रसीलो रे ॥३॥

आप भी नाचै छैलो भगत नचावे,  
नाचे नाच नचावै रे ॥४॥

नाचत नाचत भयो मतवारो,  
मतवारो श्याम हमारो रे ॥५॥

काशीराम को श्याम रंगीलो,  
यो भक्तां को रखवारो रे ॥६॥



### भजन १५

बह आ गया खाटुवाला-२ ॥ टेर ॥

तन केशरिया बागो सोहे, मोहन मुरलीवाला ॥१॥

शीश मुकुट कानों बिच कुण्डल, गल मोतियत की माला ॥२॥

श्याम नाम तूं क्यों नहीं लेता, पड़ा जुबां पे ताला ॥३॥

जमुना किनारे धेनु चरावे, ओढ़े कम्बल काला ॥४॥



भीम बली के पुत्र लाडले, अहिलवती के लाला ॥५॥  
 अपने भक्त पर कृपा करीनी, भक्तों का रखवाला ॥६॥  
 मन्दिर में झूठा डलवाया, झोटा दे वृजवाला ॥७॥  
 एक निशानी हम बतलावें, श्याम का रंग है काला ॥८॥  
 श्याम मन्दिर पर दुष्टों ने जब, अपना घेरा डाला ॥९॥  
 गर्व तोड़ कर श्याम बहादुर, फट खोला है ताला ॥१०॥



### भजन १८

श्याम बाबा हरो न मेरी पीर जियरा दुःखी हुआ ॥ टेर ॥  
 नैया बीच भवर में मेरी, छाई चारों ओर अन्धेरी ।  
 आन बंधावो धीर ॥ जियरा ॥१॥  
 मो सम कौन कुटिल खल कामी, सब पतितन में मैं हूँ नामी ।  
 हुआ यह अधम शरीर ॥ जियरा ॥२॥  
 सिवा तुम्हारे नहीं कोई मेरा, शरणा आन लिया अब तेरा ।  
 माफ करो तकसीर ॥ जियरा ॥३॥  
 भला बुरा जैसा हूँ तेरा, हरलो अब सकट प्रभु मेरा ।  
 करो कोई तदवीर ॥ जियरा ॥४॥  
 कलयुग के प्रत्यक्ष देव हो, सब देवन में देव बड़े हो ।  
 भक्तन हेतु अधीर ॥ जियरा ॥५॥  
 "मातृदत्त" तुम पर बलिहारी, तुम बिन कोई नहीं हितकारी ।  
 हे दानवीर रणधीर ॥ जियरा ॥६॥



## भजन १७

कर जोड़ खड़ी तेरे द्वार पड़ी, मेरी सुनियो श्याम पुकार ।  
लीले छोड़े वाला हो जा, लीले असवार ॥ ८ ॥

ताती तो तपती धरती, बल लग्या टीवड़ा ।  
सारे रस्ते आई मैं तो, गाती तेरा काकड़ा ।  
मेरे पगां में छाला पड़ गया अवतो भुजा पसार ॥ १ ॥

ऊँची सी टीवड़ी पर देख कर अकेली नार ।  
ढलती सी टीवड़ी पर गैल होगया धाड़ी चार ।  
चारों ओर अन्धेरो होगयो म्हारे वेसुमार ॥ २ ॥

खड़ी तो ब्राह्मण की रोवे, कोई तो बचावो आज ।  
तेरे सामने ओ दाता लुट रही मेरी लाज ।  
अवतो पलक उधाड़ मेरे दाता चाल पड़यो भरतार ॥ ३ ॥

आई थी मैं वेटो लेवण, सर्वस दे चाली ओ ।  
लेकर गठजोड़ो आई, एकली ही चाली ओ ।  
है योही तो न्याय तेरो मैं चाली रे चुडलो उतार ॥ ४ ॥

गांव सारो बरज्यो म्हाने बरजत आई ओ ।  
सासू और ससुर जी के नजरों में छाई ओ ।  
शरण आये की लाज राखले अब मेरा करतार ॥ ५ ॥

कदे ही न देख्यो मैं तो कैसे होव सासरो ।  
पहली पोत आई मैं तो लेकर तेरो आसरो ।  
एसो के कसूर मेरो, जो लेइर चूनड़ी उतार ॥ ६ ॥

देव तने मान कर मैं आई जग छोड़ कर ।  
ऐसो तो भरोसो नहीं थो जास्यूं पल्लो फाड़कर ।  
मत सोवे दातार श्याम यहाँ मच रही घोरमधार ॥ ७ ॥



दुनिया तो बोले सारी, श्याम बड़ो दाता है ।  
 खाली मोली न भर देव, ऐसो भाग्य विधाता है ।  
 मेरी वरियाँ क्या में बढगयो सुनले सरजनहार ॥८॥  
 इतनी पुकार सुनी दीन बन्धु दीनानाथ ।  
 लीले पर चढ़ कर आयो नंगी तलवार हाथ ।  
 अंजनी को लियो लाल साथ में मोर छड़ी कर धार ॥९॥  
 चुन चुन कर धाड़ी मारया, अन धन दीन्यो जाय ।  
 रोती ब्राह्मण की हांसी मुर्दा न दियो जिवाय ।  
 मोर छड़ी को झाड़ो दीन्यो खड़यो करयो भरतार ॥१०॥  
 मगन हो ब्राह्मण की नाचै, बोल है जय जयकार ।  
 सब कोई आज्यो इनके सांचो है यो दरबार ।  
 बिगड़ी बात बनावे दाता नैया कर दे पार ॥११॥



### भजन १८

ओ खाटू के बाबा श्याम तू लीले चढ़कर आज्या ।  
 तू लीले चढ़कर आज्या भक्तां का कष्ट मिटाज्या ॥  
 हो ज्या मन का पूरण काम, तू लीले चढ़कर आज्या ॥ टेर ॥  
 नैया पड गई बीच भंवर में, भारी अथाह जल में ।  
 नैया हो रही डांवा डोल, केवट बण पार लगाज्या ॥१॥  
 मैं गयी न दूजे द्वारे, जो दीखे मोहे सहारौ ।  
 बाबा थारौ ही आधार तू आकर कष्ट मिटाज्या । २॥  
 आलू सिंहजी कहे सुन प्यारा, दो हुक्म होय निस्तारा ।  
 घनश्याम को तू ही श्याम, तू लीले चढ़कर आज्या ॥३॥



## भजन १८

( तर्ज :—ऐ मेरे वतन के लोगों )

ओ सुण अंजनी के लाला, मुझे तेरा एक सहारा ।  
अब अपनी शरण में ले लो, मैं बालक हूँ दुखियारा ॥ ८ ॥

माथे पर तिलक विशाला, कानों में सुन्दर वाला ।  
थारे गले राम की माला, ओ लाल लगोटे वाला ।  
थारो रूप जगत से न्यारा, लगता है सबको प्यारा ॥ १ ॥

प्रभु साळासर के मांही, थारो मन्दिर है अति भारी ।  
नित दूर दूर से आवे, थारे दर्शन कौ नर नारी ।  
जो लावे घृत सिन्दूरा, पा जावे वो फल पूरा ॥ २ ॥

सीता का हरण हुआ तो, श्रीराम पर विपदा आई ।  
तुम जा पहुँचे गढ़ लंका, माता की खबर लगाई ।  
वानर मिलकर सब बोलें, तेरे नाम की जय-जयकारा ॥ ३ ॥

जब शक्ति बाण लगा तौ, लक्ष्मणजी पर मुर्झा आई ।  
वानर सेना घबराई, रौंये रामचन्द्र रघुराई ।  
तुम लाय संजीवन दीन्हा, लक्ष्मण के प्राण बचाये ॥ ४ ॥

प्रभु बीच भंवर के मांही, मेरी नाव हिलोरा खाती ।  
नहीं हौता तेरा सहारा, तौ डूब कभी की जाती ।  
अब दे दो इसे किंनारा, बनकर के खेवनहारा ॥ ५ ॥

प्रभु तारे भक्त अनेकों, चाहे नर था या थी नारी ।  
अब बौलौ पवन कुमारा, मेरी कब आयेगो बारी ।  
ये वाल मण्डल के बालक, चाहते हैं तेरा सहारा ॥ ६ ॥



## भजन २०

( तर्ज :— लावणी )

कर लाख जतन तू होणी तो होसी टाली ना टलै ॥ टेर ॥

होणहार बलवान जगत में कह गये ज्ञानी ध्यानी ।

होणी के बस राजा हरिश्चन्द भरयो नीच घर पानी ॥१॥

होणी के वश रानी कैकयी, महला माहीं लूठी ।

राम गये बनवास और दशरथ की देही लुटी ॥२॥

होणी के वश राजा रावण, सीता न हर लायो ।

सोने की गढ़ लंका टुटी राज विभीषण पायो ॥३॥

एक समय था होणी माता, अर्जुन पर जा टूटी ।

वो ही अर्जुन वो ही धनुष बाण था, भीलां गोपी लूटी ॥४॥

एक समय की बात बताऊँ, मतना समझो भूठी ।

राजा नल में भीखो पड़यो जद हार निगल गई खूंटि ॥५॥

होणी के वश जीव लगावे, जन्म जन्म का फेरा ।

“राम अवतार” सार सुमिरण में, दुनिया रैन बसेरा ॥६॥



## भजन २१

पाय लागूं जी महाराज बीड़द बंका ॥ टेर ॥

कुण थारी माता, कुण पिता है ।

कुण थारो नाम धरयो जी हनुमन्ता ॥१॥

अंजनी म्हारी माता, पवन पिता है ।

ब्रह्मा म्हारो नाम धरयो जी हनुमन्ता ॥२॥

कुण जी रे सत से, सागर लांघ्यो ।

कुण रे हुकम जलाई लंका ॥३॥

सीया जी रे सत से, सागर लांघ्यो ।

रामजी रे हुकम जलाई लंका ॥४॥

रावण मार, अहिरावण मारयो ।

कुंभकरण सिर बाजे डंका ॥५॥

तुलसीदास आस रघुवर की ।

असुरन मार मिटाई शंका ॥६॥





## भजन २२

( तर्ज—तेरे प्यार का आसरा चाहता हूँ )

तेरे दर्श का श्याम, मैं हूँ भिखारी ।

देवे न देवो दाता मर्जी तिहारी, मर्जी तिहारी ॥ ढेर ॥

सुना है दर्श देकर लाखों को तारा ।

जिसने भी पाया दर्शन हुवा वो तुम्हारा ।

पाप सभी कट जाते, ज्ञान ज्योति जागे ।

भव के बन्धन छूटे हुए है सुखारी ॥१॥ देवोना .....

दर्श पाकर ध्रुव ने अमरपद पाया ।

बालक प्रह्लाद तेरा भक्त कहाया ।

सबरी ने करके दर्शन परमधाम पाया ।

गिद्ध जटायू को मिला पीतृ पद भारी ॥२॥ देवोना .....

अर्जुन ने पाया दर्शन पाई मितार्ई ।

तीन लोकों की नीधि सुदामा ने पाई ।

अमर सुहागन भागन मीरा कहाई ।

ऐसा है पावन तेरा दर्श मुरारी ॥३॥ देवोना .....

भक्ति नहीं है मुझमें उन भक्तन सी ।

फिर भी है इच्छा प्रभु तेरे दर्शन की ।

चाह यही है तेरी मुरती को मन में ।

बसा लू हे श्याम सुन्दर जाऊँ बलिहारी ॥४॥ देवोना .....

हे मनमोहन कुंज बिहारी ।

भक्त वत्सल हे श्याम मुरारी ।

दया करके दे दो दर्शन शरण हैं तिहारी ।

कला भवन में हरि अर्ज गुजारी ॥५॥ देवोना.....



### भजन २३

दर्शन दे दे ओ सांवरिया तुझ बिन रहयो न मोसे जाय ॥६॥

बसे द्वारका छैल छबीलो, आ कर प्रेम रसीला ।

कुंजा कन्ठ लगाय सांवरा, रहयो न मोसे जाय ॥१॥

विरह की आग लगी मन मांही, आन बुझावो यादवराई ।

बदन रहयो कुम्हलाय सांवरा, रहयो न मोसे जाय ॥२॥

पूनमचन्द कहे सुण प्यारी, मान मान गुजरी मतवारी ।

ऐसो दही तो पिलाय सांवरा, रहयो न मोसे जाय ॥३॥





## भजन २४

( तर्ज :—देख तेरे संसार की हालत )

जो चावे सो मांग भक्त यो बैठयो लखदातार,  
यो भक्तां को पावनहार ॥ टेर ॥

नरसी जी जब टेर लगाई, व्याकुल थी जब नानी बाई ।  
लीला प्रभु नें अजब दिखाई, नानी बाई कौ बण गयो भाई ।  
भात भरयो थो सेठ सांवरो, जाकर नगर अंजार ॥१॥

राणाजी की एक न मानी, मीरा हौ गई प्रेम दिवानी ;  
क्रोधित हो राणो अज्ञानी, मीरा न मारण की ठानी ।  
बना दियो विष न अमृत, विषधर न कौमल हार ॥२॥

साचा मन से जो तू ध्यावे, लीले चढ़कर दौड़यो आवे ।  
सारा संकट काट गिरावे, पल भर की ना देर लगावे ।  
मन की घुण्डी खोल बावरा यो सांचो दरबार ॥३॥

फागण का मेला में जाजे, बाबा सारा दर्शन पाजे ।  
खीर चूरमो भोग लगाजे, सवा रुपयो भेट चढ़ाजे ।  
बीच भवर में तने बचासी, लम्बो हाथ पसार ॥४॥

जगमग जगमग ज्यौत सवाई, बाबा की भारी सकलाई ।  
अमृतरस की वर्षा छाई, चूकै मतना भोला भाई ।  
"कला भवन" में अर्ज गुजारे, पायक रामअवतार ॥५॥



## भजन २५

मन्दिर जाती मीरा न सांवरियो मिल गयो रे,  
 गिरधर जादू कर गयो रे ॥ टेर ॥  
 राणो मीरा न समझावे, के हो गयो थारे क्यो न बतावें ।  
 फीका पड़ गया नैन फरक बोली में पड़ गयो रे ॥१॥  
 आज म्हाने मिल गया बनवारी, पल-२ में जाऊँ बलिहारी ।  
 चुरा लिया म्हारा नैन कि दिल पर जादू कर गयो रे ॥२॥  
 राणो मीरा न समझावे, बड़ा घरां की रीत बतावे ।  
 कुल क लाग्यो दाग, पति जीवतड़ो मर गयो रे ॥३॥  
 मनमोहन है पति हमारो, सारे जग को है रखवारो ।  
 कहता "राधेश्याम" मीरा न गिरधर मिल गयो रे ॥४॥



## भजन २६

दिल पर तेरी कन्हैया तस्वीर बनाली है ।  
 गुलशन है ये तुम्हारा, इसका तू ही माली है ॥ टेर ॥  
 धड़कन ही बोलती है, अन्तस टटोलती है ।  
 भावों की बात अपने, भावों से तोलती है ।  
 कहता नहीं जुवां से, ऐसा ये सवाली है ॥१॥  
 मालिक मकान तू है, मेरा जहान तू है ।  
 कह कर मैं क्या पुकारूँ, प्राणों का प्राण तू है ।  
 तू ही मेरा दशहरा और तू ही दीवाली है ॥२॥



अखत्यार अब तुम्हारे, जीवन का फँसला है ।  
मेरा ये आशियाँ तो पर्दे में ही पला है ।  
पतवार नाव की अब दाता ने संभाली है ॥३॥

गोपाल को पता है, अग से क्या वास्ता है ।  
संसार के रचेया, सेवक की क्या खता है ।  
शिव श्याम बहादुर ने, हस्ती ही मिटाली है ॥४॥



### भजन २७

श्री श्याम घनश्याम नाम की महिमा भारी रे ।  
ओ म्हारे कुल का देवता क्यों देर लगाई रे ॥ देर ॥

सुदी ग्यारस की रात जगाई कुनबो सभी बुलायो ।  
बारस के दिन करयो चूरमो गिरधारयो नहीं आयो रे ।  
जी बालक को आज जड़लो वो ही नहीं पायो रे ॥१॥

नीचे ढूँढयो उपर ढूँढयो, ढूँढयो गली बजारां रे ।  
एक कांजर को कुणबो भारी, पूछयो उस न जाकर रे ।  
कोइ बालक न देख्यो हो तो, म्हाने बतावो रे ॥२॥

कांजर बालक न ले जाकर, कूँवा में पटकायो रे ।  
भांभरिया गोटा का कपड़ा, खाड़ा में गाढ़यायो रे ।  
भूठी सौगन्ध खावे कांजर नही बतावे रे ॥३॥

बालक की मां अन्न नहीं खावे, सात दिनां से भूखी रे ।  
गेहूँ चना को खेत नीर बिन सारी खेती सूखी रे ।  
कर हिम्मत कूँवा पर आयो, रोवण लाग्यो रे ॥४॥

कूँवा मे से बालक बोल्यो, ओ बाबा क्यूँ रोवे रे ।  
 म्हारो बाबो म्हार कने नित की मूण्डो धोवे रे ।  
 खीर चूरमौ माखन मिश्री म्हाने खुवावे रे ॥५॥

कूँवा में से बालक काड़यो, देख दुनिया सारी रे ।  
 सुण कर मायइ दौड़ी आई, छाती से चिपकायो रे ।  
 ओ गिरधारया धन्य हो गयो बाबो मिल गयो रे ॥६॥

सोहनलाल लोहकार प्रभु का हर्ष-हर्ष गुण गावे रे ।  
 चरण कमल को लियो आसरो, ठोर नहीं कहाँ जावे रे ।  
 शरण पड़े की बिगड़ी बनानी, आवे थाने रे ॥७॥

## भजन २८

श्याम बाबा के दर्शन करे जायेंगे ।  
 मरते-मरते भी ये नाम रटे जायेंगे ॥ १ ॥  
 आपके दर्शन को आये बड़ी दूर से ।  
 करके दर्शन तुम्हारा चले जायेंगे ॥ २ ॥  
 आपके दर्शन अगर हमको हो जायेंगे ।  
 तो सीधे ही वैकुण्ठ को चले जायेंगे ॥ ३ ॥  
 मेरे मन की लग्न को भी सुनना प्रभु ।  
 पूरी करना सभी हम चले जायेंगे ॥ ४ ॥  
 "मनोहर शर्मा" शरण तेरी आन पड़ा ।  
 साल भर में ही दर्शन को फिर आयेंगे ॥ ५ ॥



## भजन २६

कामूडा लाल घड़लो म्हारो भर दे रे ॥ ढेर ॥

तू मत जाणे सांवरा आई रे अकेली ।

सात सहेल्यां म्हारे संग छ रे ॥१॥

तू मत जाणे रे सांवरा बिना रे गांव की ।

बरसानो म्हारो घर छ रे ॥२॥

तू मत जाणे सांवरा अखण्ड कुंवारी ।

श्याम बिहारी म्हारो वर छ रे ॥३॥

चन्द्र सखी भज बाल कृष्ण छवि ।

श्याम क चरणां में म्हारो चित छ रे ॥४॥



## भजन २७

( तर्ज :—छुप गया कोइ रे )

आयो नहीं अब तक रे सांवरियो वीर रे ।

तेरे बिना म्हाने मैया कुण उठावे चीर रे ॥ ढेर ॥

बाबो कहयो थो नानी, सांवरो कन्हाई ।

तेरो है मेरी लाड़ो, धर्म को भाई ।

भात की बरिया बीते, छुट्यो जावे धीर रे ॥१॥

सास ननद मारे तीर का सा ताना ।

नाराणो देवर देवे कसके उलाहना ।

क्यो नहीं आकर पूछे नैणा की नीर रे ॥२॥

मनढे को कोमल थो तू दुखीयां को सीरी ।  
 दीनां को नाथ थों तू भक्ता रो भीड़ी ।  
 मेरी ही बेर कैयां हुयो तूं वे पीर रे ॥३॥  
 माय विना की मैं तो, नहीं सागो भाई ।  
 बाबुल फकीर मेरो, होवे कुण सहाई ।  
 हाय विधाता कैसी फूटी तकदीर रे ॥४॥  
 काग उड़के तेरा सगुन मनाऊँ ।  
 झुर-झुर रौऊँ उबी बाट निहाऊँ ।  
 मान बढ़ाज्या नहीं तो बातां रहसी थीर रे ॥५॥  
 मनक पड़ी काना में श्याम धणी आयो ।  
 चूनढ उढ़ाके कंचन मेह बरसायो ।  
 कला भवन को "हरि" को थांस्यू ही सीर रे ॥६॥

### भजन २१

राम नाम रस पीजै मनवा, राम नाम रस पीजै ॥ टेरे ॥  
 राम नाम है बड़ो सुखदाई, लगे न पैसा कोडी भाई  
 विष अमृत कर लीजे मनवा ॥१॥  
 जात पात ना पूछे कोई, हरि को भजे सो हरि का होई ।  
 तज कुसंग को दीजे मनवा ॥२॥  
 सत संगत में दौड़ कर आवो, सत जनों के दर्शन पावो ।  
 बस मैं उन्हें कर लीजे मनवा ॥३॥



सच्चे मन से हरी गुण गावो, यम से अपना फन्द छुड़ावो ।

शरण प्रभु की लीजे मनवा ॥४॥

जीवन का आधार यही है, नैया की पतवार यही है ।

नाम हरी का लीजे मनवा ॥५॥

नाच दिखावे मीरा जैसा, प्रेम दिखावे राधा जैसा ।

तब हरी दर्शन कीजै मनवा ॥६॥



## भजन २२

अंजनी कुमार थारी महिमा अपार है ।

बिगड़ी बनाने वाले सरजनहार है ॥ ढेर ॥

शिवशंकर के अवतारी और बाल जती ब्रह्मचारी ।

करो आशा पूर्ण म्हारी, तेरा ही द्वार है ॥१॥

श्री लाल लंगोटेवाला, तेरी ध्यान से जपू में माला ।

करो थे सबकी प्रतिपाल, तेरा ही द्वार है ॥२॥

हम अर्ज करे नर-नारी, और कीर्ति गावें प्रभु थारी ।

थे राम का हो आज्ञाकारी, तेरा ही आधार है ॥३॥

हम द्वार तिहारे आवें, और घृत सिन्दूर चढ़ावे ।

गल फूलत हार पहरावे, फूलों की बहार है ॥४॥

कहे अणतु बिप्र प्रभु मेरा, काटो चौरासी का फेरा ।

प्रभ पार करो बेड़ा मेरा, तेरा ही आधार है ॥५॥

## भजन ३३

म्हाारा सेठ सांवरिया नैया लगादयो परली पार नै ॥ टेरे ॥  
 थार विना खिवैया मेरो दूजो बणसी कूण ।  
 सवा पहर नरसी की बरियाँ चौड़े पड़सी हुणजी ॥१॥  
 खोटी मीठी कहल्युं थाने थारे नीड़ रोल्यु ।  
 रात बिरात आपके आगे मनकी बातां खोलूजी ॥२॥  
 दिल पर ठेस लगाव दाता दुनिया को यो घन्थो ।  
 सहण की भी हृद तो होसी आखिर तो हूँ बन्दो जी ॥३॥  
 करुण पुकार सुणी कृष्णा की भये अधीर मुरारी ।  
 दस हजार गज भुज बल थाक्यो, पर्वत हो गई साड़ी जी ॥४॥  
 “काशीराम” श्याम बड़ भागी ध्यान हीये में लाग्यो ।  
 प्रेम विवश करमां को खीचड़ श्याम मुरारी खाग्यो जी ॥५॥

## भजन ३४

देख तेरे भक्तों की हालत क्या हो गई श्री श्याम ॥  
 थारो दुनिया में है नाम ॥ टेरे ॥  
 मन्दिर की शोभा अति भारी, भीतर बैठे श्याम बिहारी ।  
 दांड भुजा गोपीनाथ मुरारी, बाई भुजा भोले त्रिपुरारी ।  
 डयोढया पर हनुमान ॥१॥  
 भक्त आपका भोत छणेरा, तेरे आसरे पडया है डेरा ।  
 तू है बाबा मालिक मेरा, हरदम ध्यान धरूँ मैं तेरा ।  
 कुछ तो राखो मान ॥२॥



गीत गांवती दुनिया आवे, खीर चूरमो भोग लगावे ।  
गठजोड़ा की जात दिलावे, सवा रुपयो भेंट चढावे ।  
और करे गुणगान ॥३॥

रामेश्वर ये भजन जो गाया, गांव भूँभनू स्थान बताया ।  
नारायण भक्त का दास कहाया, हरदम तेरा ध्यान लगाया ।  
राखो म्हारो मान ॥४॥



### भजन ३५

म्हारो घडी रे घडी रो रिछपाल खाटू वालो श्यामजी ।  
म्हारो देव बडो रे दातार खाटू वालो श्यामजी ॥ १ ॥  
नैया पड गई वीच भंवर में, केवट भूल्यो राह ।  
दास भरोसे बैठया आपके, सूनी पड़ी छः पतवार ॥ २ ॥  
आधी रात पहर के तड़के, खाटू पड़ी रे पुकार ।  
सुणत पुकार नींद से छठया आय सम्भाली पतवार ॥ ३ ॥  
दीन अनाथों के मेरे प्रभुजी, थारो हो आधार ।  
डूबी नैया पार लगावे, श्याम बडो ही दातार ॥ ४ ॥  
आलूसिंह जी करे वीनती, सुनो मेरे करतार ।  
दास गाडियो अरज करत है, नैया लगावो सबकी पार ॥ ५ ॥



भजन ३६

मन्दिर में मीरा निरत करै छः रे, ओ काना रतनारा नैन भरै छः रे ॥८॥  
साधा रे संग मीरा डोले, राणो करड़ो-करड़ो बोले ।

मूठा ही पाप धर छः रे ॥९॥  
जन्म जन्म की प्रीत पुरानी, मूरख राणो नही पहचानी ।

नित की घात करै छः रे ॥१०॥  
विष न अमृत श्याम बनायो, विषधर कोमल हार वणायो ।

पल पल पीर हरै छः रे ॥११॥  
जाय वृन्दावन बस गई मीरा, गोविन्द जी की हो गई मीरा ।

जीवन सफल करै छः रे ॥१२॥  
मीरा न लेण राणो विप्र पठायो, अन्न जल तज यो ज़िद पर आयो ।

देही ही मांग करै छः रे ॥१३॥  
धर्म को संकट आयो भारी, दुविधा में है मीरा थारी ।

दौन्यू ही ओर मरे छः रे ॥१४॥  
मनडयो भरयो है तेरी दुनिया स मालिक, अबतो उठाले तेरी

दुनिया से मालिक ।  
मीरा या करुणा कर छः रे ॥१५॥

सांवली सूरत घर मन मांही, लीन हुई हरि में पल मांही ;  
ज्योत में ज्योत मील छः रे ॥१६॥

राणो सुण पाछे पछतायो, राम अवतार विप्र यश गायो ।  
जय जयकार करै छः रे ॥१७॥



## भजन २७

जो भजे हरिनाम को, वो परमपद पायेगा ॥ टेर ॥

देह की माला तिलक और छापनी सुकाम की ।

प्रेम भक्ति के बिना ना, नाथ के मन भायेगा ॥१॥

दिल के दर्पण को सफा कर, दूर कर अभिमान को ।

खा के 'ठौ' गुरु के कदम की, तौ प्रभु मिल जायेगा ॥२॥

छोड़ दुनिया के मजे सब, बैठ कर एकान्त में ।

ध्यान धर हरि के चरण का, फिर जनम नहीं पायेगा ॥३॥



## भजन २८

मेरी पढ़ी रे भंवर बिच नैया मैया त्यार देना ॥ टेर ॥

मैया चंडी चंडी चंडी, तेरें शिखर पे सोहे मंडी ।

हो चंडी त्यार देना ॥१॥

मैया उवाला उवाला उवाला, तेरे पास खड़ा नन्दलाला ।

करदे दुश्मन का मुंह काला, हो उवाला त्यार देना ॥२॥

मैया काली काली काली, तेरा वचन जाय न खाली ।

मैया है कलरुक्ते वाली, हो काली त्यार देना ॥३॥

मैया दीपचन्द यश गावे, सब भक्तां न शीश नवावै ।

तेरा कला भवन गुण गावे, हो मैया त्यार देना ॥४॥



## भजन ३८

( तर्ज :—पंख होते तो उड़ आती हों )

दर पे तेरे हम आये हैं दर्शन दे दो बाबा श्याम,  
 सदियों से आश लगाये है ॥ ढेर ॥  
 पूजा तेरी हमें आती नहीं है, दिल से याद तेरी जाती नहीं है ।  
 तेरी दया के हम हैं भिखारी,  
 कभी तौ सुध ले लेना हमारी, खादू वाले बाबा श्याम ॥१॥  
 तेरे हौकर बाबा दुःख पायेंगे, मुँह कैसे जग में दिखलायेंगे ।  
 बिगड़ी अगर ना बनेगी हमारी,  
 हँसी हो जायेगी जग में तुम्हारी, छोड़ो हठ ये श्याम ॥२॥  
 बीच भँवर में डोले है नैया, पार करो प्रभू बनके खेवैया ।  
 काशी के बाबा श्याम साँवरे,  
 हम सेवक तुम स्वामी हमारे, पूर्णन करौ सब काम ॥३॥  
 कोई तेरे बाबा छत्र चढ़ाये, कोई रंगीले वस्त्र पहनावे ।  
 कला भवन नेरे गुण गाये,  
 निज दुखड़ों की गाथा सुनाये, ले लौ शरण में श्याम ॥४॥





अजन्म ८०

॥ चून्छड़ी ॥

श्याम पीया मेरी रंग दे चुनरियाँ ।

कृष्णा पीया मेरी रंग दे चुनरियाँ ॥ ८० ॥

ऐसी जो रंग दे रंग नहीं उतरे ।

धोबी धोवे चाहे सारी उमरिया ॥ ८१ ॥

राती ना ओढ़ूँ मैं पीली ना ओढ़ूँ ।

ओढ़ूँगी श्याम मैं तो काली कमरिया ॥ ८२ ॥

बिना रंगाये मैं घर नहीं जाऊ रे ।

बीत जाये चाहे सारी उमरिया ॥ ८३ ॥

मैं जल जमुना भरत जात रही ।

श्याम बजाई ऐसी मीठी मुरलिया ॥ ८४ ॥

मीरा के प्रभू गिरधर नागर ।

श्याम ले चल मुझे अपनी नगरिया ॥ ८५ ॥



## भजन ८१

॥ सहृदय की नजर ॥

माँ महर इन बच्चों पर, जो आश लगाये बैठे हैं ॥ ढेर ॥  
 अच्छे बुरे का ज्ञान नहीं, सम्यक पूजा का ध्यान नहीं ।  
 हृदय के सुन्दर भावों को, ये आज चढ़ाने आये हैं ॥१॥  
 नटखट याद वालक है तेरे, तूने क्यों ऐसा स्वभाव दिया ।  
 जैसे भी है बच्चे तेरे हैं, वो शरण में तेरी आये हैं ॥२॥  
 सुना नहीं हैं आज तलक, माँ ने बच्चों को दुतकारा ।  
 आसान नहीं है छुटकारा, वो माफ कराने आये हैं ॥३॥  
 जननी हो कर सारे जग की, तूने क्यों मुखड़ा मोड़लिया ।  
 जो भूल हुई बच्चों से, वो माफ कराने आये हैं ॥४॥  
 माँ बेटों का पावन रिश्ता, टुट सकता नहीं प्रहारों से ।  
 हकीकत अपने जीवन की, ये तुम्हे बताने आये हैं ॥५॥



## भजन ८२

वृज के नन्दलाला, राधाजी के सौवरिया ।  
 सब दुःख दूर हुऐ, जब तेरा नाम लिया ॥ ढेर ॥  
 मीरा पुकारे तुम्हें, गिरधर गोपाला ।  
 मर गया अमृत से, विष का मरा प्याला ।  
 कौन मिटाये उसे जिसे तूने राख लिया ॥ सब दुःख ॥  
 जब तेरे गोकुल पर आई विपदा भारी ।  
 एक इशारे से, सारी विपदा टारी ।  
 उठ गया गोवर्धन, जिसे तूने उठा दिया ॥ सब दुःख ॥



नैनो में श्याम वसै, मन में बनवारी ।  
 सुध विसराय गई, मुरली की धुन प्यारी ।  
 मन के मधुवन में, रास रचावो रसिया ॥ सब दुःख ॥  
 देख रहे हो, तुम मेरे दुखड़े सारे ।  
 कब दर्शन दोगें, नैन के तारे ।  
 अधरो पर मुरली काँथे कारी कामरिया ॥ सब दुःख ॥

### भजन ८३

हे रामेश्वर हे शिव शंकर, मेरी अरज सुन लेना ।  
 दया के सागर मेरी खाली झोली को भर देना ॥ ढेर ॥  
 मैं हूँ अधमी मैं मूढ़ पापी, मैं तो हूँ बेसहारा ।  
 ऐसी ज्योती जगा दो ज्ञान की, मिट जावे अधियारा ।  
 मेरी नैया डोले भँवर में जानू नाही खेना ॥ मेरी अरज ॥  
 दुनिया तो है भूल भुलैया जानू डगर ना तेरी ।  
 कैसे कटेगी तू ही बता दें जन्म मरण की फेरी ।  
 मैं हूँ भिखारी तेरा पुजारी, शरण चरण देना ॥ मेरी अरज ॥  
 इस उजड़े सुन सान से बन को, तू ही चमन करेगा ।  
 है पक्का विश्वास प्रभू, मेरी विपदा तू ही हरेगा ।  
 कला भवन के बालक तेरा गुण गावे दिन रैना ॥ मेरी अरज ॥

## भजन ४४

म्हारो वेढो पार लगा दीज्यो सालासर महाराज ।  
 सालासर महाराज, बाबा मेंहन्दीपुर महाराज ।  
 भटके ने राह दिखा दीज्यो, सालासर महाराज ॥ १ ॥  
 म्हारी लाज राखो थे अबकी, म्हारी नाँव भँवर में अटकी ।  
 अटकी न पार लगा दीज्यो, सालासर हनुमान ॥ २ ॥  
 है एक आसरो थारो, नहीं और कोई है म्हारो ।  
 विपदा में साथ निमा दीज्यो, सालासर महाराज ॥ ३ ॥  
 प्रभू इतना नहीं विचारो, गलती न मेरी सुधारो ।  
 वीती बाता न भुला दीज्यो, सालासर महाराज ॥ ४ ॥  
 घर घर चर्चा भारी, थे दीन दुःखी हितकारी ।  
 इस बालक न अपना लीज्यो, सालासर महाराज ॥ ५ ॥



## भजन ४५

मेरी गलीयन में आना साँवरिया ।  
 आना सावरिया, आना साँवरिया ॥ १ ॥  
 कित गोकुल कित मथुरा नगरी हो—२  
 हृदय बीच रास रचाना साँवरिया ॥ २ ॥  
 बैठ कदम पर बंशी बजावे हो—२  
 मुरली की देर सुनाना साँवरिया ॥ ३ ॥  
 कोरी कोरी मटकी में दहीड़ों जमायो हो—२  
 माखन मिश्री खिलाना साँवरिया ॥ ४ ॥  
 चन्द्र सखी भज बाल कृष्ण छवि हो—२  
 सपना में दर्श दिखाना साँवरिया ॥ ५ ॥



## भजन ८६

कोई कहियों रे प्रभू आवनकी, आवनकी मन भावन की ॥ टेर ॥  
 आप न आवे, लिख नहीं भेजे, बान बड़ी ललचावन की ॥ कोई ॥  
 ये दोऊ नैना कहयो नहीं माने, नदिया बहे जैसे सावन की ॥ कोई ॥  
 कहा करुँ कछु बस नहीं मेरा, पाख नहीं चढ़ जावन की ॥ कोई ॥  
 मीरा कहे प्रभू गिरधर नागर, चेरी भई हूँ तेरे पावन की ॥ कोई ॥



## भजन ८७

॥ साड ॥

म्हारा खाटु बारा नाथ, म्हाने प्यारा लागोजी  
 प्यारा लागो जी अन्नदाता प्यारा लागोजी ॥ टेर ॥  
 मोर मुकट थारे शीश बिराजे मणिमाल गल मांही ।  
 दम दम दमकै काना रा कुण्डल, दामनी ज्यो घन मांही ॥१॥  
 कुंकुम केसर तिलक विराजे, भल भल भलकै भाल ।  
 अमृत वरसै नैन रसिला, अधर लजीला लाल ॥२॥  
 तन केसरिया बागो खोहे, फिलमिल फिलमिल पाग ।  
 रत्नजडित थारे छत्र बिराजे, पिताम्बर कटि मांही ॥३॥  
 सुर नर मुनिजन थारा गुण गावे महिमा अपरम्पार ।  
 चरण कमल को चेतो तेरो गावे रामोतार ॥४॥

## अजन्त ४८

पहुँच कर महल में यो दरवान बोला ।  
 दर पर भिखारी अजीब आ गया है ॥  
 नहीं मानता कहता मोहन से कह दौ ।  
 कि मिलने सखा बदनसीब आ गया है ॥ टेर ॥  
 यह सुनते ही घनश्याम, नंगे ही पैरों ।  
 चले दौड़ आये बाहर जो देखा ।  
 लिपट कर सुदामा के सीने से रोये ।  
 कहा रुक्मणी से हबीब आ गया है ॥१॥  
 हुई खूब खातिर खुशियाँ महल में ।  
 कहा श्याम से भूल कर कैसे आये ।  
 सखा बोला लुटकर गरीबी के हाथों ।  
 मदद मांगने ये गरीब आ गया है ॥२॥  
 तुमने तो घनश्याम सदन को तारा ।  
 अजामिल, कश्यप गणिका को तारा ।  
 मेरा जुलम उनसे ज्यादा नहीं है ।  
 यही सोच कर ये गरीब आ गया है ॥३॥  
 रहे श्याम के संग कुछ दिन सुदामा ।  
 चले द्वारिका से तो घनश्याम बोले ।  
 न घबरावों हमदम गई बदनसीबी ।  
 खुशियों के दिन अब करीब आ गये हैं ॥४॥  
 तन्दुल के बदले में दाता मुरारी ।  
 तीनों ही लोकों का खजाना लुटाया ।  
 रोका जो रुक्मण ने बोले यूँ मोहन ।  
 कर्जा चुकाने का वक्त आ गया है ॥५॥



## भजन ४६

ओ कहाँ छुपे हो श्री श्याम ।

सारे जग के रखवारे, हम तुम्हे पुकारे, अब आ करो  
कल्याण ॥ देर ॥

मत्स्य बराह कच्छप अवतारी,  
मोहनी रूप धरे त्रिपुरारी,  
नरसिंह बन कर भक्त उवारी,  
कभी हंस, कभी हय ग्रीव, कभी वामन भये भगवान ॥१॥

परशुराम बन प्रगटे कृपाला,  
रघुकुल भूषण राम प्रतिपाला,  
रावण मारे दीन दयाला,  
मर्यादा पुरुषोत्तम ने फिर रखी धर्म की आन ॥२॥

कृष्ण मुरारी गिरवर धारी,  
गोपी बल्लभ कुंज बिहारी,  
देवकी नन्दन हे बनवारी,  
कौरव मार महाभारत रचकर, दिया गीता ज्ञान ॥३॥

हा हा कार मचा है जग में,  
भटक रहे सब पाप के भग में,  
स्वार्थ व्याप रहा रग रग में,  
कला भवन में हरी कहे प्रभु तयारो जगत जहान ॥४॥

## भजन ५०

खाटू में बाबो विराज रहयो कृष्ण कन्हैया ।  
 कृष्ण कन्हैया बाबा मुरली के बजैया ॥ टेर ॥  
 श्याम कुण्ड में न्हाके बोलो, बोलो कृष्ण कन्हैया ।  
 जय - जय खाटु के बासी, खाटु के बसैया ॥  
 शरण तिहारी आये बाबा, दर्शन दो कन्हैया ।  
 भूल जाओ सब दुनिया के भगड़े बोलो कृष्ण कन्हैया ॥  
 धूप कपूर से आरती होवे, जय हो कृष्ण कन्हैया ।  
 दर्शन बाबा हमको देवो, खाटु के बसैया ।  
 मनहर शर्मा शरण आपकी गावो कृष्ण कन्हैया ॥

## भजन ५१

चरणों का पुजारी हूँ चौखट का भिखारी हूँ ।  
 जिन्दगी दाव पर रख दी, प्रभु ऐसा जुआरी हूँ ॥ टेर ॥  
 ये मेरी हकीकत है, चहुँ ओर मुसीबत है ।  
 हारा हुआ प्राणी हूँ, सुनले यदि फ़रसत है ।  
 उमरा तेरी यादों में प्रभु क्या न गुजारी है ॥१॥  
 रुख नेक निहारो तो दिढ दिल से लगावो तो ।  
 मुदत से जो प्यासा हूँ, दो घूट पिळावो तो ।  
 तस्वीरे अदा तेरी, इस दिढ में उतारी है ॥२॥



हर बात समझते हो, अनजान भी बनते हो ।  
 नाराजी है क्या ऐसी, दिलदार न मनते हो ।  
 दीवाना हूँ जिस दिन से, छवि नेक निहारी है ॥३॥  
 शिव श्याम बहादुर के, दो नैनो की उद्योति हो ।  
 करुणा ही तेरी प्यारे, बदनाम जो होती है ।  
 कहने भी नहीं पाता, नौकर सरकारी हूँ ॥४॥



### भजन ५२

कोण सजायो श्रृंगार आज म्हाने प्यारो लागे ॥ देर ॥  
 केसरिया मखमल रो जामों पहरायो ।  
 इतर की महक अपार ॥१॥ आज म्हाने.....  
 चम चम जो चमके मुकुट की मणियां ।  
 किरण की अजब बहार ॥२॥ आज म्हाने.....  
 चम्पा चमेली की चुन चुन कलियां ।  
 खूब सजाया गलहार ॥३॥ आज म्हाने .....  
 मस्तक लगायो ऐसो केशर को चन्दन ।  
 छाई ज्यों केशर की क्यार ॥४॥ आज म्हाने.....  
 छाई है खुशियां मदन मन मांही ।  
 वांकी छवि न निहार ॥५॥ आज म्हाने.....



भजन ५२

(तर्ज :— छुप गया कोई रे)

डस गयो कालो रे कंवर रोहितास ने ।  
 छाती भर आवे बेटा देख तेरी लाश ने ॥ १ ॥  
 फल तोड़न न बेटा, गयो तू तो बाग में ।  
 डस गयो कालो नाग, कवर तेरी गात में ।  
 जुलम कियो रे बैरी, अन्धियारी रात में ॥ १ ॥  
 नयना तो खोलो बेटा मुखड़े से बोलो रे ।  
 माता तो रोवे बेटा, एक बर तो बोलो रे ।  
 छुप गया जैसे चन्दा, अन्धियारी रात में ॥ २ ॥  
 लाश को लेकर रानी, श्मशान आई रे ।  
 अपने कंवर की रानी, चिता तो बनाई रे ।  
 नयनों से नीर बहे, वह बह जात रे ॥ ३ ॥  
 इतने में ही राजा, हरिश्चन्द्र ढेरयो ।  
 पहले चुका दे रानी, करजो तू मेरो ।  
 पीछे जलाना राणी, चिता और लाश ने ॥ ४ ॥  
 प्राण नाथ मेर, पति परमेश्वर ।  
 इस दुखिया के पास, नहीं कोई वस्त्र ।  
 दया तो विचारो राजा, बेटे की लाश पे ॥ ५ ॥  
 मैं तो हूँ नौ र, मालिक मेरो भंगी ।  
 इस दुनिया में राणी, नहीं कोई संगी ।  
 करजा चुका दे राणी, साड़ी तेरे पास में ॥ ६ ॥  
 कर्जा चुका कर रानी, चिता तो जलाई रे ।  
 गरुड़ चढ़ आये तब देखो बनवारी रे ।  
 भक्त कहे सत के बल, आये भगवान रे ॥ ७ ॥



## भजन ५८

( तर्ज :—एक प्यार का नगमा है )

ना स्वर है ना सरगम है, ना लय ना तराना है ।

हनुमान के चरणों में एक फूल चढ़ाना है ॥ ८ ॥

जब बाल रूप में प्रभु, सूरज को निगल डाले ।

अभिमानी सुरपति के सब दर्प मसल डाले ।

बजरंग हुए तब से संसार ने जाना है ॥ १ ॥

सब दुर्ग ढहा करके, लंका को जलाये तुम ।

सीता की खबर लाये, लक्ष्मण को बचाये तुम ।

प्रिय भरत सरिस तुमको, प्रभु राम ने जाना है ॥ २ ॥

जब राम नाम तुमने, पायान नगीने में ।

तुम फाड़ दिये सीना, सियाराम थे सीने में ।

विस्मित जग ने देखा, कपि राम दिवाना हैं ॥ ३ ॥

हे अजर अमर स्वामी, तुम हो अन्तर्यामी ।

ये दीन हीन चंचल, अज्ञानी अभिमानी ।

अब नजर महर करदो, मेरा कौन ठिकाना है ॥ ४ ॥



## भजन ५५

लीले ली करके सवारी-२, धावो जरा धावो मेरे श्याम  
विहारी ॥८॥

नेकी के बदले में पाई बुराई है ।

अपनों ही से देख लो चोट खाई है, दो फ़ैसला न्यायकारी ॥९॥

होकर दुःखी मैंने तुमको पुकारा ।

गलती कभी फिर ना होगी दुबारा ।

सेवा नहीं कुछ भी मुझसे बनी है ।

ये दिल हमेशा तुम्हारा ऋणी है, रक्षा करो पीड़ हारी ॥१०॥

ममूधार में है यह जीवन की नैया ।

इसको किनारे लगादो कन्हैया ।

निर्बल के बल तुम हो, निर्धन के धन तुम हो ।

तुम ही कलेजे की प्रभु धड़कन हो, हारा हुआ ये जुआरी ॥११॥

सच्चा है ये हाल गोपाल दिल का ।

देता भुलावा यह माया का चिलका ।

रे मन तू अपने उसूलों को भूला ।

भूला वो वादा जो पहले कबूला, माया ने मत है बिगारी ॥१२॥

शिव श्याम बहादुर की बिनती यही है ।

बीती हुई अपनी तुमसे कही है ।

होगी दया दास पर कब तुम्हारी ।

बिगड़ी दशा को निहारो मुरारी, सुध क्यो कन्हैया बिसारी ॥१३॥





## भजन ५६

मेवाड़ी राणा भजना से लागे मीरा मीठी ॥ देर ॥

सकरी सी गली में मने मील्यो रे सांवरियो ।

किस विध करू मैं अनूठी रे ॥१॥

के मीरा तेरो सांवरियो दिखादे ।

नहीं तो भक्ति थारी मूठी रे ॥२॥

मेरा रमैया राणा रोम में ब्यापे ।

मन में या शंका कैया उठी रे ॥३॥

सांवरो राणा जी म्हारो सिर को सेवरो ।

मैं बांकी अगुली री अगूठी रे ॥४॥

सासू नणद मेरी दौराणी जिठाणी रे ।

बल-२ भई रे अंगीठी रे ॥५॥

मीरा के प्रभु गिरधर नागर ।

रंग तो चढयो यो मजीठी रे ॥६॥



## भजन ५७

अंजनी को लाल निरालो रे, अंजनो को ॥ ढेर ॥

घुंघरु बांध बाळो, छम छम नाचे,

लाल लंगोटेवालो रे ॥१॥

रोम रोम में राम रमैयो,

राम नाम मतवारो रे ॥२॥

भीड़ पढ़यां यो दौड़यो आवे;

भक्तारो रखवारो रे ॥३॥

राम अवतार राम भज प्यारे,

भजले बजरंग बाळो रे ॥४॥



## भजन ५८

( तर्ज :—छुप गया कोई रे )

तेरे द्वारे आयो री दुनिया से हार के ।

सुधि ले लो मेरी मैया, पलक उघाड़ के ॥ ढेर ॥

शीश मुकुट सोहे, सिंह सवारी ।

रतन जड़ित गल, हार हजारी ।

त्रिभुवन में गीत गूँजे, तेरी जय जयकार के ॥१॥

जगतारणी मां, मूमनूवाली ।

भक्त बत्सल मैया, जग प्रतिपाली ।

बभ भव के पाप काटो, दया उर धार के ॥२॥



पूजा में थारी करूं दिन रैन रे।  
 तेरे दर्शन को मैया व्याकुल नैन रे।  
 मन मेरा कैसे रहे धीरज धार के ॥३॥  
 सुर नर पाये तुम्हें करके तपस्या।  
 सुत्नभादौ मैया मेरी उलझी समस्या।  
 गुण गाये जोगी तेरा चरण पखार के ॥४॥

### भजन ५६

बजरंग थे हो मतवारा जी ॥ ढेर ॥  
 मतवारा थे मतवारा प्रभु, हो रघुवर का प्यारा जी ॥१॥  
 बालपने में खेलत खेलत, सूरज मुख में उारा जी ॥२॥  
 देवन आन करी विनती तब, छोड़ किया उजियारा जी ॥३॥  
 सागर कूद सिया सुध लाये, राम का कारज सारा जी ॥४॥  
 धाये द्रोण गिरी लाये संजीवन, लक्ष्मण प्राण बचाया जी ॥५॥  
 राम लखण पाताल से लाये, अहिरावण को मारा जी ॥६॥  
 कला भवन में आप पधारो, हरि है दास तिहारा जी ॥७॥

## भजन ६०

( तर्ज :—धमाल )

म्हारा सांवरिया सरदार बेगी नैया करदयो पार ॥टेर॥  
 थारे भरोसे नाव मुरारी जग सिन्धु में छोड़ी रे ।  
 इ पर आंच न आवे दाता बिपदा दीज्यो टार ॥१॥  
 आपस मांही सेवक थारा, मोटो मून्डो राखेजी ।  
 कृपाकरो गिरधारी आंकी, बुद्धि देवो सुधार ॥२॥  
 खोटी मीठी कहता डोले, मन में खोफ न खावे जी ।  
 कुण कुण कितने पानी मांही दाता करो विचार ॥३॥  
 थे तो छी भंडार दया का, थारे से के छानी रे ।  
 श्याम वहादुर अरज गुजारे, विनती बारम्बार ॥४॥

## भजन ६१

॥ नान्नी की पुकार ॥

सरवरिया के तीर खड़ी या नानी नीर बहावे है ।  
 मां का जाया बीर बिना कुण भात भरण न आवे है ॥ टेर ॥  
 एक दिन म्हारो भोलो बाबुल, अरबपति कहलायो थो ।  
 अन्न धन रा भंडार धणेरा, और छौर नहीं पायो थो ।  
 ऊँचा ऊँचा महल मालिया, नगर सेठ कहलायो थो ।  
 अनगिनती का नौकर चाकर याद मने जद आवे है ॥१॥  
 लाड प्यार में पली लाडली, बड़े घरा जद ब्याही थी ।  
 दान दायजो हाथी घोड़ा दास दासियां लाई थी ।



सोना चांदी हीरा मोती, गाढा भर-भर लाई थी ।  
 बीती बातां याद करूँ जद हिवडो भर-भर आवे है ॥२॥  
 तेरे भरोसे सेठ सांवरा, भोलो बाबल आयो है ।  
 गोपी चन्दन और तूमड़ा, साधाँ न संग ल्यायो है ।  
 घर घर मांगत फिरे सूरिया, म्हारो मान घटायो है ।  
 देवरियो म्हाने ताना मारे, नणदल जीव जकाव है ॥३॥  
 और सगां न महल मालिया, टुटी टपरी नरसी न ।  
 और सगां न शाल दुशाला, फटी गूदड़ी नरसी न ।  
 और सगां न माल मलीदा, रूखी सूखी नरसी न ।  
 डूब मरू पर घर ना जाऊँ, बाबल मन लजाव है ॥४॥  
 विकल होय जद नानी बाई, श्याम प्रभु न ध्यायो है ।  
 राधा रुक्मण संग लेय कर, सेठ सांवरो आयो है ।  
 भात भरण न दान दायजो, बालद भर भर लायो है ।  
 सांवरिया न निरख बावली, बातां यू बतलावे है ॥५॥  
 कुण सा नगर पधारोला थे, कुण का हो लणिहार जी ।  
 नानी बाई को भात भरण न जास्यां नगर अजार जी ।  
 नरसी जी म्हारो सेठ पुरानो, म्हारो अन्न दातार जी ।  
 नानी बाई म्हारी धरम बहन है, सांवरियो समझावे है ॥६॥  
 बात सुनी जद सांवरिय की, सारो दुखडो दूर हुयो ।  
 रंग बधावा गाती गाती घर घर यो संवाद कहयो ।  
 कला भवन थारी महिमा गावे, कब से बाट उडीक रहयो ।  
 विप्र राम अवतार प्रभु का, हर्ष हर्ष गुण गावे है ॥७॥



## भजन ६२

तेरे दीदार को मोहन लगाये आश बैठे हैं ।  
 तुम्हारे दर पे हो कर भी, यहाँ वे आश बैठे हैं ॥ टेर ॥  
 तुम्हारी एक मांकी ही, हमारा इन्तहा होगी ।  
 इसी से छोड़ दुनिया को, तेरे दर आज बैठे हैं ॥१॥  
 सुना है दरश देकर, तूने लाखों को उबारा है ।  
 मुझे भी तुम उबारोगे, ये मन में सोच बैठे है ॥२॥  
 पतित पावन तुम्हारा नाम, मैं भारी पतित ठहरा ।  
 बचालो नाम की महिमा, सरे बाजार बैठे है ॥३॥  
 उबारो तुम नहीं तौ कह दो कृष्ण कहाँ जाये ।  
 तुम्हारे वास्ते दुनिया को ही छोड़ बैठे है ॥४॥



## भजन ६३

जुड़ गई जदसूँ प्रीतड़ी तो थासू हे गोपाल ।  
 मन चंचल तो चोर है, हिवड़ो जान हाल ॥ दोहा ॥  
 नैन समदर श्याम का, इण री थाह न कोय ।  
 इण की रुख जाणे वही, ज्यो कोई दर्दी होय ॥ दोहा ॥  
 बाबा जी नैन रसीला ज्यो अमृत का प्याला जी ।  
 म्हारा सांवरिया सिरदार, म्हारा हिवड़ रा हार ।  
 थारी म्हारी भोत पुरानी थारी जी गोपाल ॥ टेर ॥



दोहा- श्याम भरोसे न्यावड़ी, संमंदर में दी छोड़ ।  
 तूफानों का सांवरा, तो मूंडो दीज्यो मोड़ ।  
 झलक पलक दिखलायकर तो पूरो मन की आस ।  
 थे ही जीवन जेवड़ी, तो हूँ दासन को दास ॥  
 बाबाजी मोर मुकुट, नख वेसर कुण्डल सोहे जी ।  
 थारो जोवां सिणगार, लेवां आरती उतार ।  
 म्हे तो थारा इण चरणों रा प्रेम पुजारी श्री गोपाल ॥१॥

दोहा- दिन भर निरखू जीव में, तो सांवरिय को नूर ।  
 नैणां स तो दूर है, हिवडे से नहीं दूर ॥  
 वैजन्ती दर में पड़ी, तो लकुटी लीन्ही हाथ ।  
 मन की जद खिलसी कली, तो शीश मुकुट गल हार ॥  
 बाबाजी जादू गारी बंशी याँ चित चोरयो जी ।  
 हुई कालज के पार, दीन्ही सुरता बिसार ।  
 वेगा आकर सुध वृध लीज्यो जी गोपाल ॥२॥

दोहा- पद पंकज की रज सदा, चाहूँ हे वृजराज ।  
 थारी लीला गांवता, मोहे न आवे लाज ॥  
 जगत नियन्ता आप हो, जग जाहिर है नाम ।  
 चाहूँ भक्ति आपकी, दया सिन्धु निष्काम ॥  
 बाबजी श्याम बहादुर, चरण शरण में अग्योजी ।  
 म्हारी सुग जो पुकार, लेबो थाम पतवार ।  
 थारे सू गिरधारी अरज गुजारी जी गोपाल ॥३॥



## भजन ६४

तर्ज :—धमाल

ओ हो बाबा खाटू का घनश्याम थाने आणो पडसी रे ॥टेर॥

थाने रे बुलावा खातर आज अखाड़ो रोप्यो रे ।

थारे या भक्तां रो कुनवो थाने सूंप्यो रे ॥१॥

यात्री आकर जात देवे, खीर चूरमो चढावे रे ।

ना पुत्र थाने अरजी देकर वंश बढावे रे ॥२॥

साचे मन से जो भी ध्यावे मन वांछित फल पावे रे ।

श्याम धणी यो भक्तां का सारा काम वणावे रे ॥३॥

कृष्ण पुकार सुण भक्तां री, दौडयो-२ आवे रे ।

निज भक्तां न सुखी देख कर पाछो आव रे ॥४॥

भक्तां रें यो मुख से बोले, भक्तां रो सिरदार रे ।

रामकृष्ण का श्याम सलौना, थारी हो रही जय-२ कार ॥५॥





## भजन ६५

श्री श्याम शरणो थारो जी, मोहे त्यारो नाथ बनवारी ओ ॥टेर॥  
 जहर को प्यालौ राणो जी भेज्यो, अमृत करके पी गई श्याम ।  
 पी गई, पी गई, अर-र-र.....॥१॥  
 वृज पर कोप भयों अति इन्दर, वृज को नाथ बचायो श्याम ।  
 बच गयो, बच गयो, अर-र-र.....॥२॥  
 भक्त प्रह्लाद प्रेम से सुमरयो, भक्त की लाज बचाई श्याम ।  
 बच गयो, बच गयो, अर-र-र.....॥३॥  
 लगा अचल के जहर पूतना, प्रभु के पास सिधारी सा ।  
 तर गई, तर गई, अर-र-र.....॥४॥



## भजन ६६

( तर्ज :— प्रभाती )

प्यारो पवन दुलारो मेरी मैया प्यारो पवन दुलारो रे ॥टेर॥  
 मस्तक, मुकुट सोवणो सोहे, कानन कुण्डल वारो रे ।  
 पांव पैजुनी छम छम नाचै, लाल लंगोटो वालो रे ॥१॥  
 कालजड़ी री कोर और यो, नैना बिचलो तारो रे ।  
 माथा रो सिरमौर और यो, है कुल देव हमारे रे ॥२॥  
 आज दिवाली हौली म्हारी, आज दशहरो म्हारो रे ।  
 आज म्हारे आंगणीया आयो, अंजनी लाल दुलारो रे ॥३॥  
 धन धन अंजनी माता थारो, पूत जगत से न्यारो रे ।  
 रामअवतार राम को चैरो, राम नाम मतवारो रे ॥४॥



## भजन ६७

( तर्ज :— करती हूँ मैं नित तेरा )

करता हूँ मैं नित तेरा गुणगान मेरे श्याम ।

रख लेना आज सभा में मेरी मान मेरो श्याम ॥

हे श्याम बिहारी, रख लाज हमारी ॥टेर॥

जितने भी थे साथी, सभी ने नाता तोड़ लिया ।

जब मिला न कोई सहारा, तुम से नाता जोड़ लिया ।

आया हूँ कुछ आशा ले, फरियाद सुनो श्याम ॥१॥

ना इसका पता था मुझको, इतना दुख में पाऊँगा ।

है नाम भुलाकर तेरा, दर दर ठोकर खाऊँगा ।

बिन तेरे नहीं है सहारा, कुछ ख्याल करो श्याम ॥२॥

करुणा निधि है नाम तेरा, करुणा तो दिखलावो ।

दीदार दे के अपना, मेरे भाग्य जगावों ।

नित माला जपूँ मैं तेरी हूँ बालक में अनजान ॥३॥

तू ने अनेकों की प्रभु, बिगड़ी बनाई है ।

मुझ से हुई क्या भूल जो तू देर लगाई है ।

ऐसा निठुर तो हमने नहीं जाना मेरे श्याम ॥४॥





## भजन ६८

( तर्ज :— दुनिया बदल रही है )

कब से पुकारते हैं आ जावो डमरुवाले ।

बिगड़ी हुई हमारी, जल्दी से तू बनाले ॥ ८ ॥

आखों में रंग तेरा, दिल में तुम्हारी बस्ती ।

शक्ति हमें दो शंकर, लूटे हमेशा मस्ती ।

दुनिया के झगड़ों से, रख दूर भोले भाले ॥ ९ ॥

अच्छे बुरे हैं जैसे, दर पर तुम्हारे आते ।

श्रद्धा से एक छोटा, पानी तुम्हें चढाते ।

गाते हैं दास तेरे तू भी तो साथ गाले ॥ १० ॥

तेरे सहारे हमने, नैया को छोड़ दी है ।

अब दिल में गम न कौई, पतवार तोड़ दी है ।

तूफ़ान से क्यों डरे हम जब खुद ही शिव सम्हाले ॥ ११ ॥



## भजन ६६

( तर्ज :—तुम्ही मेरी पूजा )

सती साम्भवी गौरजा मां भवानी ।  
शरण हूँ तिहारी, दया का भिखारी ॥ ६६ ॥

तू ही मेरी शक्ति, तू ही मेरी भक्ति ।  
बिना दर्श पाये मैया आंख्या तरसती ।  
करोड़ों की नैया किनारे उतारी ॥ १ ॥

तू ही सर्व मंगला, तू ही भद्रकाळी ।  
तू ही भैरवी अम्बिका, तू दिवाली ।  
तू सिंह वाहिनी है खड्ग खप्रधारी ॥ २ ॥

तू ही वैष्णवी शंकरी, तू ही कमक्षा ।  
तू ही दैत्य दळिनी ना ले मां परिक्षा ।  
तेरा दास फिर भी रहे क्यों दुखारी ॥ ३ ॥

तू नारायणी शारदा सम्पदा है ।  
तू वरदायनी दास की सर्वदा है ।  
तू जगत्तारिणी शिव चरण रज तुम्हारी ॥ ४ ॥





## भजन ७०

अब तक जो त्यारे हो, अब मोहे त्यारी ।  
 तारनहार है नाम तिहारो ॥ टेर ॥  
 दीन दयालू कहे जग सारो, फिर क्यों पाप पुन्य विचारो ।  
 नेक दयाकर मोहन निहारो ॥ अब तक ॥  
 समरथ हो सब मांती हे स्वामी, भक्त वत्सल हे अन्तर्यामी ।  
 भूल रहया क्यूं थे प्रण थारो ॥ अब तक ॥  
 होता वही जो तुम करते हो, कर्मों को कैसे धरते हो ।  
 कैसो अनोखो यो न्याय तिहारो ॥ अब तक ॥  
 सब तेरे है तू सबका है, परमपिता सारे जग का है ।  
 हाथ बढ़ा मोहे देवो सहारो ॥ अब तक ॥  
 कला भवन के श्याम बिहारी, हरी थारो थांसू अर्ज गुजारी ।  
 भक्ति अटल दो आन उबारो ॥ अब तक ॥



## भजन ७१

( तर्ज :—तुम्हे चांद के बहाने )

लीले पे सवार हो के आया, बाबा लीले पे सवार हो के आया ।  
 भक्तो का दुःख हरने देखो, खादु वाला आया है ॥ लीले ॥  
 मेरे सिर पर हाथ तूं धर दे ।  
 मेरी खाली म्फोली भर दे ।  
 गुण तेरे गाऊंगा मेरे बाबा ॥ लीले पर सवार ॥

तेरा नाम है भोत घणेरा ।  
 माया ने है मुझको घेरा ।  
 मुझे अपना लेना मेरे बाबा ॥ लीले पर सवार ॥  
 तेरी माया सबसे न्यारी ।  
 तुझे जाने दुनिया सारी ।  
 दरश दिखा, देना मेरे बाबा ॥ लीले पर सवार ॥  
 तुझे किसने आज सजाया ;  
 तुझे देख मेरा मन भाया ।  
 मगन होय नाचूँ मैं, मेरे बाबा ॥ लीले पर सवार ॥  
 भक्त मंडल तेरा गुण गावे ।  
 चरणों में शीश नवावे ।  
 खाटु में बुला लेना मेरे बाबा ॥ लील पर सवार ॥

### भजन ७२

जलती रहे खाटु वाले, ज्योत तेरी जलती रहे ॥ टेर ॥  
 किसने बाबा तेरा भवन बनाया, किसने चंवर डूलाया ॥१॥  
 भक्तों ने बाबा तेरा भवन बनाया, सेवक चंवर डूलाया ॥२॥  
 केसर चोला बाबा अंग विराजे, चन्दन तिलक लगाया ॥३॥  
 ध्वजा नारियल सवा रुपयो, तेरी भेट चढ़ाया ॥४॥  
 माखन मिश्री का थाल सजाया, तेरे भोग लगाया ॥५॥  
 दूर दूर से यात्री आवे, आकर शीश नवाया ॥६॥  
 श्याम बहादुर ने ध्यान लगाया, अपने पास बुलाया ॥७॥  
 कला भवन बाबा दर तेरे आया, आकर शीश नवाया ॥८॥



## भजन ७३

( तर्ज :—गरीबों की सुनों )

दयालु भगवान अरज हमारी, ना और कोई मेरा शरण हूँ तिहारी ॥८॥  
 पीर भरी हिवडे के मांही, धीर न मौकू आवे है ।  
 मिथ्या है संसार तेरो यौ, सांवरिया नहीं आवे है ।  
 भवर बीच नैया पड़ी है कन्हैया, लो पतवार त्यारे सम्हालो कन्हैया ।  
 किधर रुख है देखो नजर मिलाओ, तुम्हारा ही हूँ श्याम सुन्दर बचालो  
 इबालक पर भीड़ पड़ी है गोवर्धन गिरधारी ॥ १॥  
 लियो सहारो श्याम तिहारो, रुकै नैण से नीर नहीं ।  
 दुखियारो हूँ जनम जनम को, इसू आवे धीर नहीं ।  
 तुम्हारी दया पर तो ये जिन्दगी है, सुनो प्राण प्यारे मेरी बन्दगी है ।  
 जमाने के मालिक ये फरियाद मेरी, करो फसला अब लगावो न देरी ।  
 बिन मांझी की लाखों नैया तूने पार उतागी ॥ दयालू ॥२॥  
 देनी होगी भीख दया की, करुणा के आगार प्रभू ।  
 श्याम बचालो बेग संभालो, नैया की पतवार प्रभू ।  
 तुम्हारे सिवा कौन मेरा जहाँ में, चरण छोड़ तेरे दाता जाऊँ कहीं में ।  
 ये पर्दा तुम्ही को हटाना पड़ेगा, मिला कर नजर मुस्कुराना पड़ेगा ।  
 कितनो को घायल कर डाला, तेरी नैन कटारी ॥ दयालू ॥३॥  
 शीश के दानी तेरे शानी, देव नहीं कोई दूजा है ।  
 अन्तर में है याद तुम्हारी ये ही मेरी पूजा है ।  
 तुम्ही दास पर हो दया करनेवाले, गरीबों के दाता हूँ तेरे हवाले ।  
 तुम्ही हो मेरी जिन्दगी के सहारे, मेरी आरजू प्राण जीवन हमारे ।  
 काशी के अरमान तुम्ही हो, अबके मेरी बारी ॥ दयालू ॥४॥

## भजन ७८

मैं विनती बारम्बार करूँ था से श्याम बिहारी जी ।  
 मेरी वेगा विपदा हरियो जी थे श्याम बिहारी जी ॥ ढेर ॥  
 निज स्नातु धाम के बासी, जहाँ सुख सम्पत है निवासी ।  
 नित की जयकार मनावे थारे नर और नारी जी ॥१॥  
 थारे शीश मुकुट रत्नों का, कुण्ड कानों में हीरो का ।  
 तीलक माल केसर का सुन्दर, अजब निहारु जी ॥२॥  
 थारे गल बीच माला साजे, जा पर काम कोटि भी लाजे ।  
 दुष्टों का करते दमन, आप भक्तन हितकारी जी ॥३॥  
 ग्यारस की रात जगावे, प्रेमी जन थाने भजन सुनावे ।  
 बारस न भोग लगा नरनारी करे मनवारी जी ॥४॥  
 कला भवन के भक्त तिहारे श्रीश्याम नाम के मतवारे ।  
 देवी मिश्र हरष गुण गावे, थारो प्रेम पुजारी जी ॥५॥

## भजन ७५

ओ लाल लंगोटे वाला, ओ भक्तों का रखवाला हम तेरी शरण में आये ।  
 कर दो दया दर्शन कीतो फिर जीवन सफल हो जाये ॥ ढेर ॥  
 शिवशंकर के अवतारी, माता अंजनी के दुलारे ।  
 राम नाम की धुन में हरदम, रहते हो मतवारे-२ ।  
 तेरे जैसा राम भक्त कोई ओर नजर ना आये ॥ कर दो .....



कितने ही भक्तों के तुमने बिगड़े काम बनाये ।  
 कितनों की लज्जा राखी कितनों के प्राण बचाये-२  
 तेरी दया से तुलसीदास ने, राम के दर्शन पाये ॥ कर दो .....  
 तेरी महिमा बड़ी निराळी, कोई पार न पाया ।  
 सुन कर तेरी महिमा स्वामी, मैं भी शरण में आया-२  
 मेरी नैया तेरे हवाले, तू ही तो पार लगाये ॥ कर दो .....  
 मुझको अपना दास समझ कर इतनी दया तो करदो ।  
 निश दिन तेरो दर्शन पाऊँ, ऐसा मुझको वरदो-२  
 'ताराचन्द' कहे बजरंग तेरी आश लगाये ॥ कर दो .....



### भजन ७६

कलयुग में नाम कमायो, खाटू को बाबो श्याम ॥ १ ॥  
 तू अहिलवती को जायो, महाभारत देखण आयो ।  
 संग में तीन बाण तू लयायो, पल में दिखा दिया है काम ॥ १ ॥  
 तनै भगत सदा मन माया, जो मन सूँ ध्यान लगाया ।  
 जग मे वो अमर कहाया, जां को श्याम बहादुर नाम ॥ २ ॥  
 जो थांसे नेह लगायो, सूत्योंडो तू जाग्यायो ।  
 मूटपट तालो खुलवायो, चाबी को नांही काम ॥ ३ ॥  
 एक भगत मन्दिर मे भारी, आलूसिंह तेरो अमारी ।  
 "राधे" पर किरपा थारी, सारो थे सगला काम ॥ ४ ॥

## भजन ७७

खाटू वाले मुझे बुढाले, एक बर खाटू धाम ।

आसरो तेरो है ॥टेरा॥

कृष्ण कला अवतारी तूं, भक्तां को हितकारी तूं ।

मात वचन हियधारी तूं, भीम पुत्र बलकारी तूं ।

शोश के दानी महा बलवानी, राख भक्त की आन ॥ आसरो.....

मीरा के घर श्याम गयो, दूध को प्यालो तुरत पीयो ।

जहर को अमृत बना दियो. श्याम नाम ले मीरा पीयो ।

मीरा हो गई अमर नाम ले, राख दास की आन ॥ आसरो.....

नरसीजी की ढेर सुनी, दूटी गाडी ठीक करी ।

नानी बाई को भात भरयां, भक्त की ईच्छा पूरी की ।

खाटू वासी सब सुख रासी, राख दास को आन ॥ आसरो.....

लाखों को तुमने तारे, बडे बडे कारज सारे ।

मन इच्छा फल वो पावे जो आवे तेरे द्वारे ।

अटल "चिरंजी" द्वार पढ़यो है, राख दास की आन ॥ आसरो.....





## भजन ७८

म्हारी अबकी अबकी अटकी नैया पार लगाओ जी,  
आवो सावरिया हो नटवर नागरिया ॥टेर॥

एक दिन थारो भक्त सांवरा अरवपति कहलायो थे ।  
परणा कर म्हाने सीख देई करोड़ रो द्रव्य लुटायो थे ।  
मैं आज बणी निर्धन की बेटी आन बचावो जी ॥ आवो ॥

दोहा-सासरियो दुश्मन भयो, तो प्यारा भया वृजराज ।  
कपट भरी पत्री लिखी, कोइ लेण पिता की लाज ॥  
दयोरानी जीठाणी म्हाने नित की बोली बोल छः ।  
देवरियो नाराणों म्हारे भरया घाव न छोल छः ।  
म्हारा बाबाजी रे विष्णु धर्म की लाज बचावो जी ॥ आवो ॥

दोहा-सती द्रौपदी न प्रभु समझ धर्म की बहण ।  
सभा बीच में राखली, पाण्डव कुल की लाज ।  
म्हारी लाज भी राखो सांवरा हिवड़ो धार धीर नहीं ।  
मैं निर्भागण अवला हूँ म्हारे मां को जायो वीर नहीं ।  
थारी नानी बाईन लाल चूनड़ी आय ऊढावो जी ॥ आवो ॥



## भजन् ७६

तर्ज :—तेरे दीदार को मोहन

दया कर दान भक्ति का हमें परमात्मा देना ।  
 दया करना हमारी आत्मा को शुद्ध कर देना ॥ ढेर ॥  
 सदा से आप दीनों का प्रभु उद्धार करते हो ।  
 हमारी दीन हालत को, पतित पावन मिटा देना ॥१॥  
 बहा दो प्रेम की गंगा, दिलों में प्रेम का सागर ।  
 हमें आपस में मिल जुलकर, प्रभु रहना सिखा देना ॥१॥  
 हमारे ध्यान में आवो, प्रभु आखों में बस जावो ।  
 अन्धेरे दिल में आ करके, परम ज्योति जगा देना ॥३॥  
 हमारा कर्म हो सेवा, हमारा धर्म हो सेवा ।  
 सदा इमान हो सेवा, हमें सेवक बना लेना ॥४॥

## भजन् ८०

मकदार पड़ी जब नाव कोई ना मेरो ।  
 मैं लियो सहारो आज श्याम धणी तेरो ॥ ढेर ॥  
 अहिलवती के लाडले, पाण्डव कुल सरदार ।  
 नाग देव दौहित्र तुम भीम सेन कुमार ।  
 बरबरीक शुभ नाम श्याम धणी तेरो ॥१॥



तन केशरिया वस्त्र है, सुन्दर नेत्र विशाल ।  
 धनुष बाण सोहे सुघड़ रतन मुकुट धरे भाल ।  
 मन मोहे ऐसो रूप श्याम धणी तेरो ॥२॥

जब करी तपस्या शंभु की पाया था वरदान ।  
 विजय समर में होयगी, तीन दिये थे बाण ।  
 कोइ जीत सके बल नहीं श्याम धणी तेरो ॥३॥

महाभारत सुण जब चले, मग में छले श्रीश्याम ।  
 अजर अमर निज रूप धर, पुजवाये घनश्याम ।  
 चहुँ दिश फैल्यो सुखधाम, श्याम धणी तेरो ॥४॥

कलियुग में प्रगटे प्रभु, खाटु रहे विराज ।  
 मन इच्छा पूरी करो, सभी सुधारो काम ।  
 "किशोरी" देख द्वार, श्याम धणी तेरो ॥५॥

### भजन ८१

मेरी बात सुनो बजरंगबाळा, गल सोहे मौतियन की माळा ॥टेरा॥  
 थारे छमक छम नेवर बाजे,  
 थारे स्वर्ण मुकुट मस्तक साजे ।  
 सियाराम नाम का मतबाळा ॥ मेरी बात.....

रघुनाथ के साथ सदा रीझो,  
 इ बालक की सुध भी लीज्यो,  
 लेना नहीं थे म्हांसे टाला ॥ मेरी बात .....  
 नित की थारे घृत सिन्दूर चढ़े,  
 मुखड़े पर उमड़यो तेज पड़े,  
 थेई दो नैना का उजियाला ॥ मेरी बात .....  
 शिव श्याम बहादुर अरज करी,  
 राखो फुलवारी हरी भरी,  
 थे कदम कदम पर रखवाला ॥ मेरी बात .....

### भजन ८२

एक आश तुम्हारी है, विश्वास तुम्हारा है ।  
 अब तेरे सिवा भगवन, मेरा कौन सहारा है ॥ ढेर ॥  
 फूलों में महक तुमसे, तारों में चमक तुम से ।  
 वर्ष में शीतलता तुमसे, अग्नि में दहक तुम से ।  
 जिस ओर नजर डालूँ मुझे तेरा सहारा है ॥ अब तेरे .....  
 मरुदार में नैया है मजबूर खिंचा है ।  
 नैया का खिंचा तो, अब तू ही कन्हैया है ।  
 भव पार लगा भगवन मरुदार किनारा है ॥ अब तेरे .....  
 इस तन में रमे हो तुम, इस मन में रमे हो तुम ।  
 मैं तुमको कहाँ ढूँढूँ, इस दिल में बसे हो तुम ।  
 घनश्याम दर्श दे दो, चंचल ने पुकारा है ॥ अब तेरे .....



## भजन ८३

( तर्ज :— प्रभाती )

मैं माखन नहीं खायो मेरी मैया, मैं माखन नहीं खायो री ॥टेर॥  
 भोर भये गैयन के पीछे, मधुवन मोही पढायो री ।  
 चार पहर बंशीवट भटक्यो, सांझ पडे घर आयो री ॥१॥  
 मैं बालक बहियन को छोडो, छींको किस विध पायोरी ।  
 ग्वाल बाल सब बैर पड़े है बरबस मुख लपटायो री ॥२॥  
 तू जननी दिल की अति मोली, इनके कहि पतियायो री ।  
 तेरे दिल कछु भेद बसत है, जान परायो जायो री ॥३॥  
 ले ले अपनी लकुट कमरिया, बहुत ही नाच नचायो री ।  
 सूरदास तब विहस यशोदा, ले चर कठ लगायो री ॥४॥



## भजन ८४

तू मान मेरी बन्दे, दुनिया एक सपना है ।  
 स्वारथ के नाते हैं यहां कोई न अपना है ॥ टेर ॥  
 सपनों की दुनिया में, गर तू खो जायेया ।  
 कुछ हाथ न आयेगा, पीछे पछतायेगा ।  
 सपने बेगानी है, ये कोरी कल्पना है ॥१॥  
 ये धन दौलत माया, और ये कंचन काया ।  
 कुछ साथ न जायेगा, तू विरथा भरमाया ।  
 माटी का तन तेरा, माटी में ही मिलना है ॥२॥

मालिक के घर तेरा, पल पल का लेखा है ।  
 करना हो सो करले, कल किसने देखा है ।  
 हरि नाम सुमर बन्दे. भव से जो तरना है ॥३॥  
 ये भूल भुलैया है. इसमें न भुलाना तू ।  
 हीरा सा जन्म तेरा. यो ही ना गवाना तू ।  
 रामावतार तुझको; माया में ना फसना है ॥४॥

### भजन ८५

दिल की हकीकत किसको सुनायें ।  
 हम अपना तुझको कैसे बनाये ॥ ढेर ॥  
 तेरे लगन दर्शन की मुझे श्याम ।  
 है आपको हम कैसे बताये ॥ दिल की हकीकत ॥  
 मुझ पर महर की नजर कब होगी ।  
 है आपको श्याम कैसे बतायें ॥ दिल की हकीकत ॥  
 फागुन के मेले में मुझको बुलाले ।  
 तो दूंगा नाथ तुमको लाखों दुआए ॥ दिल की हकीकत ॥  
 प्रीत लगा कर श्याम मुखड़ा न मोड़ो ।  
 दिल की लगी को श्याम कैसे वृम्भायें ॥ दिल की हकीकत ॥



## भजन ८६

( तर्ज :—प्रभाती )

आज वृन्दावन रास रच्यो है, मैं तो देखन जाऊँ री ॥८६॥  
 हार सिंगार करुं मेरी सजनी मोतियन मांग भराऊँ री ।  
 ओढ कसुमल पचरंग लहरयो, मोहनी रूप बनाऊँ री ॥१॥  
 तारा गण तो ताल बजावै, मैं बीन बजाऊँ री ।  
 नरहरी नृत्य करूँ हरि आगे, राग छतीसूँ गाऊँ री ॥२॥  
 ग्वाल रूप मोहन बन आवे, मैं ग्वालिन बन जाऊँ री ।  
 मोहन दान दही को मांगे, मैं कंस को जोर दिखाऊँ री ॥३॥  
 ऐसो रास रचूँ मोरी सजनी, प्रेम मगन हो जाऊँ री ।  
 चन्द्रसखी भज बाल कृष्ण छवि, ज्योत में ज्योत मिलाऊँ री ॥४॥



## भजन ८७

( तर्ज :— मोरिया आछो बोल्यो रे )

कन्हैया हिन्डो घल्यो रे हरियल बाग मे-३  
 आई आई रे सावणिया री तीज ॥ कन्हैया ॥  
 कन्हैया सावण सुरंगो प्यारो मास रे-३  
 चमके चमके रे आभा में प्यारी बीज ॥ कन्हैया ॥  
 कन्हैया रिमफिम बरसे रे रुड़ो मेवड़ो-३  
 म्हारी तारा छाई चूनड़ जावे भीज ॥ कन्हैया ॥  
 कन्हैया संग की सहेल्यां जोवे बाट रे-३  
 बांकी सासू और जिठाणा जावे खीज ॥ कन्हैया ॥

कन्हैया राधा दिवानी थारे नाम कौ-३  
 म्हारी कंचन जॅसी काया जावे छीज ॥ कन्हैया ॥  
 कन्हैया दास भवर की या वीनती-३  
 थे तो वादीला भक्तां पर जावो रीझ ॥ कन्हैया ॥



भजन ८८

॥ झूलो ॥

घनश्याम बुलावे झूला झूलन चालो बाग में ॥ ढेर ॥  
 झूलन चालो बाग है सज सोलह श्रृंगार ।  
 बतीसों आभूषण पहनों, गल मोतियन को हार ॥१॥  
 छुटा छबीली बाग की, खिल रही केसर क्यार ।  
 चपा चमेली खिली केतकी, भवर करत गुंजार ॥२॥  
 दादूर मोर पपीहा बोले पीऊ करत पुकार ।  
 घन गरजे और बिजली चमके शीतल पडत फुहार ॥३॥  
 मलयागिरी को बण्यो हिण्डालो खिच रह्यो रेशम तार ।  
 झूलो आप झुलावे मोहन गावे राग मल्हार ॥४॥  
 शिव सनकादिक आदि ब्रह्मादिक कोई नहीं पावे पार ।  
 दास नारायण शरण आपकी, करियो बेडो पार ॥५॥





( ७१ )

भजन ८६

( तर्ज :—ओल्यू )

ओ जी ओ बिहारी म्हारो सांवरिया,  
थारी गाढी मन में आवे वेगा आवो जी सांवरा ॥ टेर ॥  
डाटयोडो मनडो म्हारो ना डटै जी,  
म्हारो नैन कह्यो नहीं माने वेगा आवोजी सांवरा ॥१॥  
शहरी सी नदिया नाव पुरानी जी  
म्हारी अध विच गोता खावे, पार लगावोजी सांवरा ॥२॥  
दिलबारी बातों म्हे कुण से कहवां जी.  
म्हारो मरम कोई ना जाणे, वेगा आवोजी सांवरा ॥३॥  
सोहनलाल की या विनती जी,  
थारे चरणों में लिपटाल्यो वेगा आवो जी सांवरा ॥४॥



भजन ८०

नौ दस मास गर्भ में भूल्यो, नौ दस मास कष्ट पायो ।  
अबतो बाहर काड म्हारो सांवरा एक पलक भूल नाही ।  
बार-२ समझायो म्हरे जीवन जन्म गवां दियो हाथां ही रे ॥टेर॥

॥ अन्तरा ॥

पांच बरस को हुयो म्हारो हसलो मन लाग्यो है खेळण मांही ।  
पांचा म होय पचीसा हो गयो. अब म्हारो राम करे काई ॥१॥  
तीस बरस को हुयो म्हारो हसलो, मन लाग्यो रे माया मांही ।  
बूढ़ा होयकर बाहर भटक्या, अब भटक्या होव काई ॥२॥

धरमनारायण दूत भेजिया, दूत आया है लेवण ताई ।  
 पकड़ भुजा आगे कर दीनी, मार पड़ी दरड़ा ताई ॥३॥  
 ताता खम्बा बांध भरावै, सांच बात बतावे भाई ।  
 हाथ जोड़ कर कवै म्हारो हंसलो, सुकरथ काम करया नांही ॥४॥  
 माता पिता न गाल्या दीनी, गुरुआं न पोख्या नांही ।  
 कहत कवीर सुणो रे भाई साधो, चौरासी मुगतोर भाई ॥५॥

### भजन ६१

कन्हैया नानी बाई ( तर्ज :— मोरीयो..... )

कन्हैया नानी बाई रो भरज्या भात रे-३.....  
 थासूं अर्ज गुजारे नानी बाई आज ॥१॥  
 कन्हैया बाबुल आयो मोडा क साथ में-३.....  
 साग लायो माँझ मजीरा भरवा भात ॥२॥  
 कन्हैया ताना भारे है घर का गाँव का-३.....  
 भाई वण कर आइया, भरज्य बाई रो भात ॥३॥  
 कन्हैया कैइया जाऊरे, बाबुल के सामने-३.....  
 भरोसे तेरे आयो बाबुल भरवा भात ॥४॥  
 कन्हैया लाज बचाइया, आइया ताबलो-३.....  
 रोवे आखड़ल्या ये जोव थारी वाट ॥५॥  
 कन्हैया लाज बचाई रे, नानी बाई की-३.....  
 धन-धन बनवारी थे, आछयो भरयो भात ॥६॥



## ॥ श्रीश्याम प्रार्थना ॥

हाथ जोड़ विनती करूँ, सुणज्यो चित्त लगाय ।  
 दास आ गयो शरण में, रखियो उनकी लाज ॥  
 धन्य ठूँढारो देश है, खाट्ट नगर सुजान ।  
 अनुपम छवि श्री श्याम की, दर्शन से कल्याण ॥  
 श्याम-श्याम मैं रटूँ, श्याम है जीवन प्राण ।  
 श्याम भक्त जग में बड़ो, उनको करूँ प्रणाम ॥  
 खाट्ट नगर के बीच में, बण्यो आपको धाम ।  
 फागुन शुक्ला मेला भरे, जय-जय बाबा श्याम ॥  
 फागुण शुक्ला द्वादशी, उत्सव भारी होय ।  
 बाबा के दरबार से, खाली जाय न कौय ॥  
 उमापति, लक्ष्मीपति, सीतापति श्रीराम ।  
 लज्जा सबकी राखियो, खाट्ट के श्री श्याम ॥  
 पान, सुपारी, इलायची अत्तर सुगन्ध मरपूर ।  
 सब भक्तन की विनती, दर्शन देवो हजूर ॥  
 "श्याम-बहादुर" प्रेम से, धरे श्याम का ध्यान ।  
 कला-भवन पावे सदा, श्याम कृपा से मान ॥

## ॥ आरतो श्री श्याम जी की ॥

ॐ जय श्री श्याम हरे, बाबा जय श्री श्याम हरे ।  
 निज भक्तों के तुमने, पूरण काम करे ॥ ॐ ॥  
 गल पुष्पों की माला, सिर पर मुकुट धरे ।  
 पीत वसन पीताम्बर, कुण्डल कर्ण परे ॥ ॐ ॥  
 रतन जड़ित सिंहासन, राजत सेवक भक्ति करे ।  
 खेवत धूप अग्नि पर, दीपक ज्योति जरे ॥ ॐ ॥

मोदक खीर चूरमा सुवर्ण थाल भरे ।  
 सेवक भोग लगावत, सिर पर चँवर डूरे ॥ॐ॥  
 म्नांम नगार घंटा घड़ियाल, शंख मृदग घरे ।  
 भक्त आरती गावे जय-जयकार करे ॥ॐ॥  
 जो ध्यावे फल पावे, सब दुःख से ऊबरे ।  
 सेवक जननिज मुखसे, श्री श्याम-श्याम रटे रे ॥ॐ॥  
 श्याम बहादुर गुरु हो, तुम ही मात-पिता ।  
 तुम ही भक्ति सुत हो, तुम ही हो भ्राता ॥ॐ॥

### ॥ आरती वालाजी की ॥

जय वजरंग बाला ओ बाबा, जय वजरंग बाला ।  
 हित चित्त से जो ध्यावे, आवे मतवाला ॥  
 श्री रामचन्द्र जी के पायक, भक्तन रखवाला ।  
 जो सुमरे सुख पावे, कट जावे जमजाला ॥  
 लाल लंगोटा हाथ में धोटा, गल पुष्पन माला ।  
 बाजू बन्द भुजा में, अंजनि के लाला ॥  
 संजीवन लाये लखन जियाये, आये तत्काला ।  
 लंका आग लगाइ, कर दिये वेहाला ॥  
 रावण का मद तुमने जाकर, खंडित कर डाला ।  
 देख रूप घबराया, बीस भुजा वाला ।  
 वो बल याद करो जी, दुश्मन घेरा डाला ।  
 भक्तजनों की लाज बचाओ बाबा सालासर वाला ॥



शुभ कामनाओं के साथ :-



**नथमल अग्रवाला**

**७६, बड़तल्ला स्ट्रीट,**

**कलकत्ता-७००००७**

**उत्तचकोटि के मसालों के विक्रेता**

हमारे यहाँ हर तरह के पीसे हुये  
एवं हाथ से कुटे हुये  
मसाले मिलते हैं ।

● **परीक्षा प्रार्थनीय** ●

30  
2

पुस्तक मिलने का पता :-

श्री नथमल अग्रवाला

७६, बड़तल्ला स्ट्रीट,

कलकत्ता-७००००७



---

Printed by :—BHAWANI ART PRESS

14, Ghouse Church Street, Calcutta-1. Phone : 34-3369  
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri